वसीली गोलीश्किन

समुंदर की गोद में

वसीली गोलोश्किन

समुंदर की गोद में

नमस्कार, मैं आर्तेक हूं! 3
आर्तेक की सैर करें 10
रूपांतर 14
"हिम तो सिर्फ़ हिम जैसा ही होता है।" 18
उपहार 22
प्रसिद्ध हमनाम 27
किरण और माचिस की तिल्ली 29
भेंट 33
सबसे आवश्यक 36
कलाबाज़ी का खेल 39
तिलस्मी घर 44
संगीत सुनने की क्षमता और आवाज़ 47
गाने वाली मिट्टी 49
साबा 50
पीढ़ी 53
द्वंद्व युद्ध 58
शीशे की डाक 61
आंसू की बूंदें 63
रूसी परीकथा 65
सूखी हुई जैली फ़िश 67
नौसिखिया 72
मित्रतापूर्ण मौसम 74
सुखद दृश्य 75
अंतरिक्ष का कण 76
सन् 2000 में आर्तेक 79
गीत कैसे बना 84

रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001

हां, सदा रहे सूरज!

अनुवादक: मानवेन्द्र गुप्ता
चित्रकार: वसीली शुल्झेंको

В. Голышкин
У самого синего моря
На хинди

V. Golyshkin
The Seaside Children's Republic
In Hindi

छाया चित्र – तास एजेंसी:
सेर्गेई लीदोव
वालेरी ख़्रीस्तोफ़ोरोव
व्लादीमिर लाग्रांभ
वीक्तोर गूसेव
फ़ेलिक्स दुनायेव्स्की
यूरी मेसन्यांकिन
अलेक्सांद्र ओबूख़ोव्स्की

© हिन्दी अनुवाद • रादुगा प्रकाशन • 1987
सोवियत संघ में प्रकाशित

Г $\frac{4803010102-442}{031(01)-87}$ 371–87
ISBN 5-05-001499-9

नमस्कार, मैं आर्तेक हूं!

मेरा नाम है आर्तेक। और तुम्हारा? मेरी मातृभूमि है सोवियत संघ। मेरा जन्म 16 जून सन् 1925 को हुआ था। मेरे हमउम्र अब पेंशन पर हैं, वे दादा और दादी बन चुके हैं, और मैं हूं कि उतना ही नन्हा जितने इस पुस्तक को पढ़ने वाले पाठक। मैं बिल्कुल भी बूढ़ा नहीं हुआ हूं, बस केवल बढ़ा हूं और बहुत अमीर हो चला हूं। मैं साल भर में अस्सी लाख का व्यय कर सकता हूं! इसलिये, प्यारे पाठक, मेरे पास जरूर आना, तुम्हें ज़रा भी पछतावा नहीं होगा। अगर तुम्हें यहां आने की अनुमति मिल गई तो समझो कि तुम बहुत सौभाग्यशाली हो। यों ही बहुत-से इच्छुक हैं और जब देश-विदेश के हज़ारों-लाखों बच्चे इस किताब को पढ़ लेंगे तो उनमें से बहुत सारे मेरे पास आना चाहेंगे।

मैंने बहुत ही कम साधनों से अपना कारोबार शुरू किया था। मेरे पहले मेहमान अस्सी पायोनियर थे जिन्हें मैंने तंबुओं में रखा था। सागर के तट पर एक सपाट मैदान में तंबुओं की दो पंक्तियां लगी थीं – चार बड़े और चार छोटे। साथ ही पायोनियरों की सभाओं का स्थान था। थोड़ी ही दूर पर खेल-कूद का मैदान था। शिविर में दो छोटे-छोटे मकान थे: एक में रसोई और भोजनालय तथा दूसरे में क्लब व पुस्तकालय, डाक्टर का कक्ष और उसका कमरा थे। उस समय आर्तेक में आने वाले अधिकतम बच्चे कमज़ोर हुआ करते थे और उन्हें डाक्टर की सहायता ज़रूरी होती थी। लेनिनग्राद की एक महिला का पत्र अभी भी सुरक्षित है। उन्होंने उस समय को याद करते हुए लिखा है: "मेरे लिये यह बहुत ही प्रसन्नता की बात थी कि मज़दूर वर्ग की बच्ची होते हुए मैं आर्तेक तब पहुंची जब वह बन ही रहा था! हमें यहां पहुंचने में कुछ दिन लग गए थे। हम अपना थोड़ा-सा सामान या तो टोकरियों में या फिर गोल-गोल अटैचियों में लिए हुए थे। यहां हम नंगे पैर घूमते थे: यात्राओं और आर्तेक से वापसी के लिये जूते बचाकर रखे हुए थे। सब तंबुओं में रहते थे और चरपाइयों पर सोते थे।" रात को बच्चे मिट्टी के तेल वाले लैंप जलाया करते थे। दो चीज़ें ही ऐसी थीं जिसकी तब भी कमी न थी और वे थीं – धूप और सागर।

साठ साल पूर्व अपने अस्तित्व के पहले वर्षों में आर्तेक की शक्ल कुछ ऐसी थी – पहले पायोनियर, पहली सभाएं, पहले दल लीडर ...

यहां पैदा हुई परंपराओं का संबंध पुराने क्रांतिकारी ज़ीनोवी पेत्रोविच सोलोव्योव के नाम से है। बच्चे इन्हें 'पायोनियर शिविर के अध्यक्ष' के नाम से पुकारते थे। उन्होंने ही बच्चों के इस राज्य के लिये जगह चुनी थी। शाम को जब बच्चे अलाव के पास बैठते तो सोलोव्योव उन्हें रूस की मेहनतकश जनता के महान नेता व्लादीमिर इल्यीच लेनिन, उनके परिवार के बारे में तथा क्रांति के अन्य वीरों के बारे में बताते। वे उनके साथ गाने भी गाते।

पायोनियरों के राज्य की संपत्ति धीरे-धीरे बढ़ने लगी। पर सन् 1941-1945 के सोवियत जनता की फ़ासिस्ट आक्रमणकारियों से युद्ध में उसे बड़ी हानि पहुंची : जो भी क्राइमिया को फ़ासिस्टों से स्वतंत्र कराने के बाद सन् 1944 में यहां पहुंचा उसे जले हुए पायोनियर भवन इत्यादि के खंडहर और जले हुए पेड़ देखने को मिले। पर अगस्त सन् 1944 में ही आर्तेक को फिर से खोल दिया गया। युद्ध के युवा वीर इस शिविर के पहले मेहमान बने। उनमें से बहुतों की छातियों पर वीरता के पदक सुसज्जित थे। और इस तरह मैं, यानी आर्तेक, फिर से अपने पुराने मेहमानदारी वाले जीवन को निभाने लगा।

मेरा राज्य काले सागर के तट पर पांच किलोमीटर तक फैला हुआ है। रीछ नामक पहाड़ी से लेकर जेनोआ किले के खंडहरों तक। यह किला क्राइमिया के प्राचीन शहर गुर्ज़ूफ़ के पास ही स्थित है। रीछ पहाड़ी और यह किला – एक प्रकार से मेरे राज्य के सीमा रक्षक हैं। वे मेरे मेहमानों की शांति की रक्षा करते हैं। पर मेहमानों की क्यों? मैं जिन बच्चों को बुलाता हूं वे यहां अपने घर जैसा महसूस करते हैं और सच पूछो तो घर से भी बेहतर। वे अपने आपको यहां के मालिक महसूस करते हैं और बहुत-से प्रसिद्ध लोग – वीर, अंतरिक्ष यात्री, लेखक, संगीतकार और खिलाड़ी – उनके मेहमान बनकर आते हैं। यह सच है कि यहां पर सदा के लिये बसना संभव नहीं, पर मैं विश्वास दिलाता हूं कि यहां की यात्रा तुम्हें जीवन भर याद रहेगी।

अब यहां पर – भवन, सागर तट, पार्क, खेल के मैदान, सिनेमा हॉल, संग्रहालय, पुस्तकालय और यहां तक कि स्कूल भी है क्योंकि यहां न केवल गर्मियों में बल्कि सारे साल भर बच्चे आते रहते हैं। पढ़ाई के महीनों में भी वे यहां आते हैं।

मेरे भवनों के सब कमरों का भ्रमण करने में कई दिन लग जाते हैं।

गर्मियों में यहां दसियों हज़ार गुलाब के फूल खिले रहते हैं और वसंत में सेब और चेरी के पेड़ सफ़ेद फूलों से ढक जाते हैं।

आर्तेक – यह सभाएं, सम्मेलन, राकेट के माडेल बनाने की, खेल-कूद की, युवा सम्वाद्दाताओं की प्रतियोगिताएं, डाक टिकट के प्रेमी, युवा टेक्नीशियन, शतरंज का क्लब, हंसमुख उत्सव 'रूसी सॉवनिअर' और अन्य बहुत-सी मज़ेदार चीज़ों का नाम है।

मेरे, यानी आर्तेक के, बारे में बहुत-से गीत गढ़े गए हैं, किताबें लिखी गई हैं और बहुत सारी फ़िल्में भी बनाई गई हैं। पर मेरा विचार है कि मेरे बारे में सबसे अच्छी तरह से तो बच्चों ने ही कहा है।

"आर्तेक यह पायोनियरों का एक शहर है। यहां सब कुछ बहुत मज़ेदार है: बच्चे भी, पेड़ भी, फूल भी और मकान भी ..."

यौन बुसूईस्क, बेल्त्सी शहर, मोल्दावियाई सोवियत समाजवादी जनतंत्र।

"आर्तेक में हमारे पास एक पूरा का पूरा समुद्री बेड़ा है! यहां किश्तियां, मोटर बोटें और स्टीमर भी हैं। मुझे इनमें यात्रा करने का अनेकों बार सौभाग्य मिला है। मेरे शहर में तो केवल पहाड़ ही हैं, सागर नहीं। कितने अफ़सोस की बात है!"

मूसा आतमातोव, किर्गीज़ियाई सोवियत समाजवादी जनतंत्र।

"एक रोज़ सुबह-सुबह, जब रीछ पहाड़ी पर बादल छाए हुए थे, हम पैदल यात्रा पर निकल पड़े। हम पंक्ति बनाकर एक दूसरे के पीछे चल रहे थे। जैसे-जैसे पहाड़ के ऊपर चढ़ते जाते सफ़र और भी कठिन होता जाता। पर कोई भी शिकायत नहीं कर रहा था। सभी आर्तेकवासियों के जाने-माने और प्यारे बलूत के पेड़ के पास पहुंचे तो हमने ज़ोर से 'हुर्रा' चिल्लाकर उसका अभिनंदन किया। उसकी कोटर में हमने अपने बाद आने वालों के नाम एक पत्र डाल दिया। यह आर्तेक की एक परंपरा है। और इसके बाद हम 'बड़े पत्थर' के पास बहुत देर तक खड़े रहे। यहां से आर्तेक का पूरा दृष्य बिल्कुल साफ़ दीख रहा था।"

सेर्योझा इवानोव, ज़िला लीपेत्स्क, रूसी सोवियत संघात्मक समाजवादी जनतंत्र।

क्राइमिया में काले सागर के तट पर अपने पंजे पानी में डुबाए हुए एक प्यारा-सा, झबरीला जानवर लेटा है। पास से इस जानवर को पहचानना संभव नहीं। ज़रा दूर जाकर देखो तो पता चलेगा कि यह 'रीछ' है, अर्थात रीछ से मिलती-जुलती एक पहाड़ी। यही है वह रीछ पहाड़ी जिसे यहां के निवासी आयु-दाग कहते हैं।

बहुत पुराने समय की बात है। आज जिस जगह पर आयु-दाग पहाड़ी है वहां तब रीछ रहते थे। यह आम रीछ नहीं, बल्कि रीछ रूपी दैत्य थे। संयोग से एक छोटी-सी बच्ची की नाव भालूओं वाले तट पर एक रोज़ आ लगी। रीछों को बच्ची बड़ी पसंद आई और उन्होंने उसे अपने पास ही रख लिया। जैसे-जैसे बच्ची बढ़ती रही उसकी सुंदरता में भी चार चांद लगते गए। वह हमेशा खुश रहती। और जब वह गाती तो बस कहने ही क्या! रीछ तो यहां तक कि अपनी नींद और शिकार करना भी भूल जाते।

पर एक दिन रीछों के तट पर एक जवान और सुडौल युवक आया। लड़की और युवक एक दूसरे को प्यार कर बैठे और रीछों से दूर भाग गए। सागर पार करने लगे। जब रीछों को मालूम चला तो उनके क्रोध का ठिकाना न रहा। सबसे बड़ा रीछ, जो उनका सरदार भी था, तुरंत सागर के पास आया और बड़े-बड़े घूंट लेकर पानी पीने लगा। वह पानी के साथ इन दोनों को भी पी डालना चाहता था। पर इस खतरे को देखकर लड़की ने प्रेम और सौभाग्य के बारे में गीत गाना शुरू कर दिया... इस प्यारे गाने ने रीछों के सरदार को इतना मोह लिया कि वह प्रेमियों को हानि पहुंचाने में असमर्थ रहा और वहीं सागर के तट पर वैसा का वैसा ही जम गया। तो यह है क्राइमिया की एक किंवदंती।

बहुत-सी किंवदंतियों से जुड़ी इस पहाड़ी से ही बस बच्चों का देश आर्तेक शुरू हो जाता है। यह एक नया और आधुनिक शिविर रूपी नगर है।

तट पर लारेल, मैगनोलिया और जैतून के पेड़ों के बीच स्थित 'समुद्री' शिविर में बच्चों के शयन-कक्ष वाले भवन बिल्कुल जहाज़ों के डेक जैसे लगते हैं।

इस शिविर के प्रवेश पर दुनिया भर के बच्चों की मैत्री का स्मारक बना हुआ है।

'समुद्री' शिविर के केंद्र में स्थित मैत्री चौक पर हमेशा लोगों की भीड़ लगी रहती है। बेहतर कहना होगा कि 'देशों की भीड़' लगी रहती है क्योंकि बारहों महीने आर्तेक में दुनिया भर के बच्चे आते रहते हैं।

नीचे के शिविर से बल खाता हुआ रास्ता हमें ऊपर वाले 'पहाड़ी' शिविर पर पहुंचा देता है। मुड़ते ही हमारी नज़र उन मल्लाहों के स्मारक पर पड़ती है जो सन् 1943 में क्राइमिया को स्वतंत्र कराते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे। इसको 'अज्ञात मल्लाह' का स्मारक कहते हैं।

जून सन् 1941 में फ़ासिस्टों ने सोवियत संघ पर आक्रमण किया था और 'अज्ञात मल्लाह' – उन बहुत-से सोवियत लोगों में से एक था जिन्होंने फ़ासिस्टों से संघर्ष किया था। यह बड़ा भयानक, कठिन और लंबा युद्ध था। सोवियत जनता ने इसका नाम महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध रखा और वह हमेशा युद्ध स्थल पर वीरगति को प्राप्त हुए योद्धाओं की पवित्र स्मृति का सम्मान करती है। युद्ध में मारे गए हवाबाज़, मल्लाह, टैंक चालक, सिपाही, तोपची और दूसरे योद्धाओं के सैकड़ों स्मारक सोवियत संघ की धरती पर बने हुए हैं।

और यह है शिविर 'पहाड़ी' अपने सफ़ेद मकानों से सुसज्जित।

'पहाड़ी' शिविर का दर्शनीय स्थान है – यहां का मशहूर संरक्षित वृक्षोद्यान।

इस उद्यान के पार आर्तेक के स्कूल की उज्जवल इमारत है। पर इस इमारत में केवल पाठशाला ही नहीं। कला मंडलियों के कमरे, तकनीकी प्रदर्शनियां, नौसैनिक प्रदर्शनी, निशानेबाज़ी का कक्ष, फ़ोटोग्राफ़ी की लेबोरेटरी, प्रदर्शनी 'मरी जन्मभूमि – सोवियत संघ', सिने स्टूडियो 'आर्तेक-फ़िल्म', आर्तेक का रेडियो स्टेशन इत्यादि भी यहीं पर स्थित हैं। स्कूल के ठीक सामने ही वह पक्का मैदान है जहां बच्चों द्वारा फ़र्श पर बनाए हुए चित्रों की वार्षिक प्रतियोगिता होती है।

स्कूल से ज़रा नीचे, सड़क के पार आर्तेक का विशाल प्यालानुमा स्टेडियम है। इसमें फ़ुटबाल का मैदान मरकतमणि की तश्तरी-सा लगता है और धूसर रंग के हार जैसी दौड़ की ट्रैक उसे घेरे हुए है। इसके पास ही स्विमिंग पूल है।

'पहाड़ी' शिविर से और नीचे 'तटवर्ती' की तरफ़ चलें।

'तटवर्ती' शिविर आर्तेक में गुलाब के सबसे बड़े बाग का मालिक है। चलिये, कुछ देर खड़े होकर गुलाब के फूलों की कोमल और समुद्र की नमकीन हवा से मिली सुगंध का आनंद लें। और फिर इससे भी नीचे चलें, घाट से होते हुए बंदरगाह पर, जहां लहरों पर भूल रहा है आर्तेक का बेड़ा – छोटे जहाज़, तेज़ मोटर नौकाएं, धीरे चलने वाली नाव, और इन सबका ध्वजपोत है मोटर-जहाज 'आर्तेक'।

चलिये, फिर से ऊपर चलें (ऐसा ही है आर्तेक: कभी ऊपर तो कभी नीचे!)। देश-विदेश के बच्चों द्वारा लगाए हुए पार्क 'मैत्री' के निकट से होते हुए हम आर्तेक के पायोनियर भवन में पहुंच जाते हैं। यहां पर दो प्रदर्शनियां लगी हैं। एक है अखिल सोवियत पायोनियर संगठन के इतिहास की और दूसरी सोवियत संघ की पहली अंतरिक्ष प्रदर्शनी।

सन् 1922 में मास्को में पहले पायोनियर संगठनों का जन्म हुआ था। इनके सदस्य 10-15 वर्ष के बच्चे बने थे। बच्चों ने ही पायोनियर संगठन के प्रतीकों को निर्धारित किया था: लाल झंडा, लाल टाई और बैज।

बच्चों के जीवन का सबसे आनंदमय समय गर्मियों में पायोनियर शिविरों में शुरू होता है। यहां पर इतने सारे रोचाक काम-काज हैं कि समझ में नहीं आता कि क्या चुना जाए। सब कुछ करने का जी होता है। टूर पर निकलने का भी, सुबह-सुबह बच्चों को जगाने वाली बिगुल की धुन सीखने का भी, और यह भी जी करता है कि पायोनियरों के अलाव वाले मनोरंजक पर्व में भाग लें।

रास्ता हमें पायोनियर भवन से आर्तेक के सबसे पहले बने हुए 'नीले' शिविर तक ले जाता है। यहां पर हर चीज़ में इतिहास की झलक है: प्राचीन पार्क में, आसमानी रंग की खाड़ी में और चित्रमय गुफाओं में भी... और वह गुफा, उसके ऊपर की चट्टान और कुंज – यह सब पुश्किन से वास्तविक रूप से संबंधित है। चट्टान, गुफा और कुंज को पुश्किन की अच्छी तरह से याद है। अपने ज़माने में कवि क्राइमिया आए थे और उन्होंने इन क्षेत्रों में विचरण किया था।

अलेक्सांद्र सेर्गेयेविच पुश्किन (1799-1837) – रूस के महानतम कवि हैं। न केवल बड़े बल्कि बच्चे भी उन्हें अच्छी तरह जानते हैं।

पुश्किन को क्राइमिया और काला सागर बहुत पसंद थे। उन्होंने इनके बारे में कई सारी खूबसूरत कविताएं भी लिखी हैं। सागर से विदाई की ये पंक्तियां लोगों को विशेष रूप से पसंद हैं:

ओ, आज़ाद तरंगित सागर, विदा!
मुझे दिखाते हो तुम अंतिम रूप-छटा,
अपनी नीली लहरें मेरी ओर बढ़ा
झलमल करते हो, गर्वीली सागर।

अब सामने है इतिहास का एक नया पन्ना। जिस मैदान पर पायोनियरों की परेड होती है वहां एक पत्थर का बना स्मृति-पट्ट लगा है। महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध में शहीद हुए आर्तेकवासियों के नाम इस पट्ट पर खुदे हुए हैं।

हमारे टूर के रास्ते का अंतिम शिविर है 'सुरद्रुमी'। यह सुरद्रुम वृक्षों के लिये प्रसिद्ध है और इसी कारण से शिविर का यह नाम पड़ा।

अगर आप ध्यान से देखें तो शिविर के ऊपर आपको एक चट्टान दीखेगी। इसकी चोटी पर जेनोआ किले के खंडहर नज़र आते हैं। चट्टान के दामन में – अलेक्सांद्र सेर्गेयेविच पुश्किन की एक छोटी-सी मूर्त्ति है।

रूपांतर

आर्तेक में ध्यान देने योग्य बहुत-सी वस्तुएं हैं: पार्क, पहाड़ियां और स्मारक इत्यादि। पर आर्तेक का गौरव है – सागर! सागर के बिना आर्तेक आर्तेक नहीं। शिविर की ओर बसों से सभी जाने वालों की नज़रें सबसे पहले सागर को ही ढूंढ़ती हैं। और वह है कि दिन में अलग-अलग समय पर अलग दीखता है: सुबह को आसमानी, दोपहर को गहरा नीला और शाम को काला...

"सागर!" जीवन में पहली बार सागर को देखने वाले आनंद से विभोर हो उठते हैं। उसके बाद बाकी चीज़ें देखते हैं: पहा-ड़ियां, चट्टानें, गुफाएं और वे सफ़ेद इमारतें, जहां उन्हें रहना है।

...बस कांच की बनी एक विशाल इमारत के पास रुकती है। सूर्य की किरणें इसको एक तरफ़ से दूसरी तक बेध रही हैं।

"यह क्या है?"

"'रूपांतरण का घर'," बच्चों को बस से उतारते हुए चालक ने शरारत भरी मुस्कान के साथ कहा।

ओल्या और कोल्या साइबेरिया से आर्तेक

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद पुनर्निर्मित आर्तेक का चित्र: नये शयन भवन, 'अज्ञात मल्लाह' के स्मारक के समक्ष पायोनियर गार्ड ऑफ़ ऑनर, युद्ध में मातृभूमि की रक्षा करते हुए मारे गए आर्तेकवासियों के नाम वाले स्मृति-पट्ट के समीप पायोनियरों की सभा।

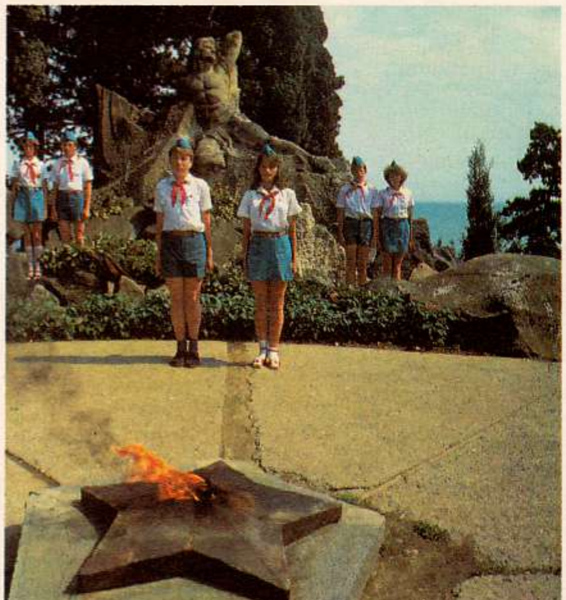

व्ला० इ० लेनिन की प्रतिमा और मित्रता का वह चौक, जहां अब शिविर के बहुत-से उत्सव मनाए जाते हैं।

आए हैं। कोल्या के विचार में ओल्या सुंदरी से कम नहीं। अपने बारे में उसका विचार कुछ और है : भोंदू-सा और बेडौल ... चाहे उसका रूपांतरण किया जाए या नहीं रहेगा तो वह वैसा ही जैसा है।

ओल्या और कोल्या इमारत में घुसे ही थे कि एक तिलस्मी शक्ति ने उन्हें एक दूसरे से अलग कर दिया और कोल्या को लड़कों वाले हिस्से में तथा ओल्या को लड़कियों वाले में ला पहुंचाया। इस शक्ति के बहुत सारे उदार हाथ, आंखें और कान थे। कानों ने कोल्या की बातें ध्यान से सुनीं, आंखों ने उसकी जांच की और हाथों ने तो यह सब कर डाला : बाल काटे, नहलाया और अच्छे-अच्छे कपड़े पहनाए।

कोल्या पार्क में घुसा और बच्चों को आनंद से देखने लगा : सफ़ेद कमीज़ें, आसमानी जांघिये, गहरे लाल रंग की टाइयां, सफ़ेद जुराब, और भूरे सैंडल।

क्या वास्तव में वह भी ऐसा ही है जैसे ये बच्चे? अचानक उसे दीखा कि उसकी सहेली ओल्या भागकर आ रही है। कोल्या को देखते ही उसने आश्चर्यचकित होकर कहा :

"तुम कितने सुंदर लग रहे हो!"

रास्ते पर एक दल चल रहा था : सफ़ेद टोपियां, आसमानी जांघिये और कमीज़ें पहने हुए सुडौल बच्चे, जिनकी खालें धूप सेंकने से तांबे के रंग की हो चली थीं। नए बच्चों को देखकर वे मिलकर एक आवाज़ में चिल्ला उठे :

"हरेक को सुप्रभात!"

"सुप्रभात!" नवागतों ने अलग-अलग स्वरों में जवाब दिया। अभी वे वास्तविक आर्तेकवासी नहीं बन पाए थे अतः फ़िलहाल आर्तेक में बातचीत के तौर-तरीके वे जानते नहीं थे। यहां तो मिलकर एक आवाज़ में अभिनंदन करना या उसका उत्तर देना होता है।

पर वे सब सही कह रहे थे : आर्तेक में, क्राइमिया में और सारे देश में सुंदर और सुनहरा प्रभात अपना तेज फैला रहा था।

"हिम तो सिर्फ़ हिम जैसा ही होता है।"

आर्तेक में पहले दिन एक दूसरे से परिचय के होते हैं। सेर्योझा अलेक्सेयेव की कामना तो पहले दिन ही पूरी हो गई। वह अफ़्रीकी बच्चे से परिचय करना चाहता था। अफ़्रीकी बच्चे का नाम मरियान था। वह जिज्ञासु और प्रसन्नचित्त था। जब वह गाना न गाता तो अवश्य कुछ न कुछ पूछता रहता।

"हिम किस वस्तु का नाम है?" उसने एक दिन सेर्योझा से पूछा।

सेर्योझा ने समझाने का प्रयास किया पर मरियान कुछ भी समझ न पाया। तब सेर्योझा ने फ़ैसला किया कि बताने की जगह आसान होगा कि अफ़्रीकी बच्चे को दिखा ही दी जाए।

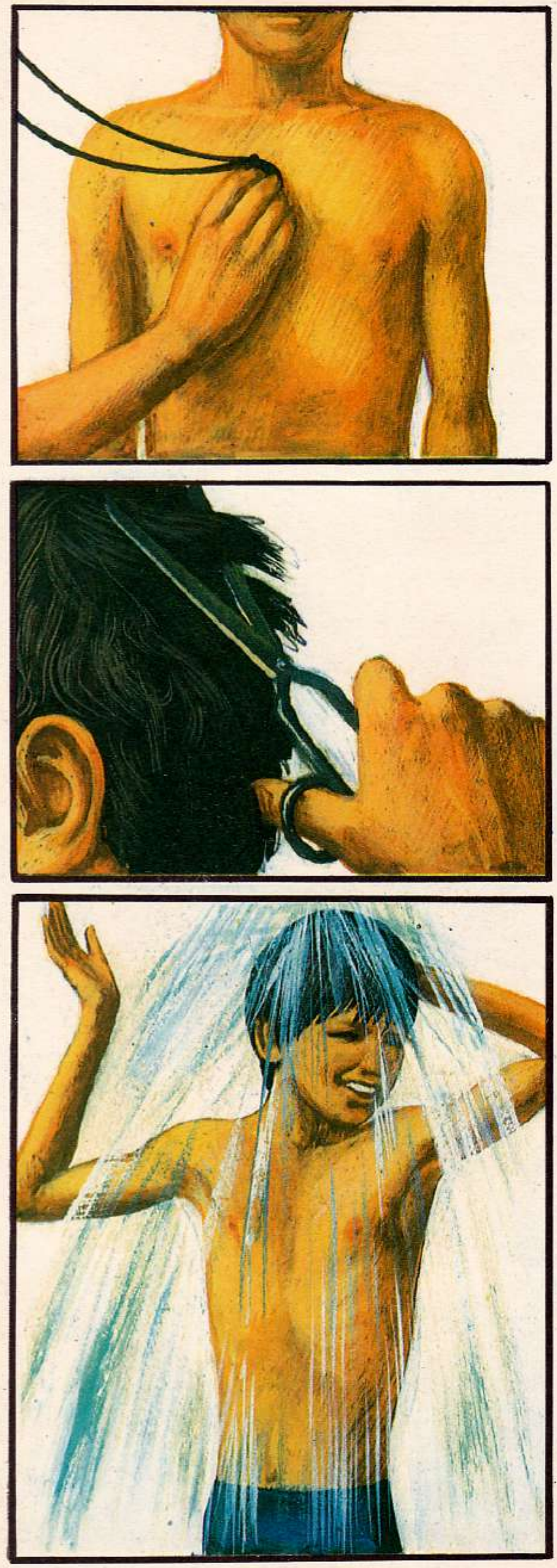

अपनी अंजलि में नमक भरके गिराते हुए वह अफ़्रीकी बच्चे को चिल्लाकर बोला :

"देखो, हिम कैसा होता है !"

अफ़्रीकी बच्चे ने एक कन उठाया और जीभ पर रखा। फिर वह दुभाषिये के द्वारा सेर्योझा से बोला :

"हिम नमक जैसा होता है। बिल्कुल वैसा ही नमकीन।"

तब सेर्योझा ने चीनी का प्रयोग करने की सोची।

अफ़्रीकी बच्चे ने चीनी के दाने को चखकर कहा कि अब वह जान गया कि हिम कैसा होता है : चीनी जैसा, वैसा ही स्वादिष्ट और मीठा।

तब सेर्योझा ने कहीं से मुट्ठी भर सफ़ेद रोयें ढूंढ़ निकाले।

"देखो," उसने मरियान से कहा, "ऐसा होता है हिम !"

"समझ गया," अफ़्रीकी बच्चे ने दुभाषिये के ज़रिये कहा, "हिम रोयें जैसा होता है, वैसा ही नरम और मुलायम।"

और नन्हा मरियान जान ही नहीं पाया कि हिम कैसा होता है।

एक दिन सुबह जब सेर्योझा जागा तो उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। आर्तेक में जो सब कुछ हरा-भरा था वह आज एकदम सफ़ेद हो चला था।

"हुर्रा !" वह चिल्लाया, "आर्तेक में जाड़ा आ गया !"

"कैसा जाड़ा," साथ वाले बिस्तर से सेर्योझा के साथी ने उससे कहा, "मिनट भर में सब पिघल जाएगा।"

यह बात है! सेर्योझा ने जल्दी से कपड़े पहने और शयन-कक्ष से दौड़कर बाहर निकला। उसने दो मुट्ठी हिम खुरचा और मरियान को जगाने भागा।

"अरे, मरियान, उठो! मैं तुम्हारे लिये हिम लाया हूं!" वह चिल्लाया।

मरियान जाग उठा और सेर्योझा के हाथ में रखे सफ़ेद पदार्थ को दिलचस्पी से ताकने लगा।

"रू-ई," उसने कठिनाई से रूसी में कहा।

"रूई नहीं, हिम!" सेर्योझा चिल्लाया। "लो, चखो!"

अफ़्रीकी बच्चे ने चखा और फिर खिड़की में से देखकर वह मुस्कुरा दिया। आखिरकार उसने

निकट से हिम को देख ही लिया और यहां तक कि चख भी लिया था।

"हिम किसी के भी जैसा नहीं," वह दुभाषिये के ज़रिये सेर्योझा से बोला। "हिम तो सिर्फ़ हिम जैसा ही होता है।"

उपहार

आर्तेक में कोई भी खाली हाथ नहीं आता है। शिविर के लिए हरेक कोई न कोई उपहार लाता है।

हंगेरियन शहर सेकेशफेखेर्वार से आई कातालीना कोवाच नाम की बच्ची एक कबूतर लाई।

यों तो वह सचमुच का नहीं बल्कि टीन का बना था। पर यह टीन का ही क्यों और लकड़ी या तांबे का क्यों नहीं? यह इसलिये कि जिस शहर से बच्ची आई थी, उसमें टीन ढालने का कारखाना है। जब वहां के मज़दूरों को मालूम चला कि कातालीना कोवाच सोवियत संघ के आर्तेक शिविर में जा रही है तो उन्होंने टीन का एक कबूतर उसे ढालकर दिया। पर कबूतर ही क्यों? यह तो सब जानते हैं: क्योंकि सारे विश्व में कबूतर को शांति का प्रतीक माना जाता है।

साथ ही मज़दूरों ने कातालीना को एक आदेश भी दिया था – आर्तेक में सबसे आदरणीय और प्रिय व्यक्ति को यह कबूतर उपहार में दे। अब वह कैसे ढूंढ़े ऐसे व्यक्ति को जबकि आर्तेक में सब

ही बड़े-भले हैं: नेक और दयालु बावर्ची आंद्रेई मक्सीमोविच और बुद्धिमान लाइब्रेरियन लरीसा वसील्येव्ना, जिनके बारे में यह कहानी सुनाई जाती है।

आर्तेक में एक विदेशी बच्चा 'बुक' को ढूंढ़ता फिर रहा था। एक अंग्रेज़ी जानने वाले ने अनुवाद किया: "बुक है पुस्तक"। बस सबने बच्चे को किताबें उपहार में देनी शुरू कर दीं। अलग-अलग तरह की – रूसी में, अंग्रेज़ी में और फ़्रांसीसी में। आर्तेक में तो विश्व भर के बच्चे आते हैं। पर वह भी पुस्तकें लेने को तैयार नहीं, बस 'बुक', 'बुक' की रट लगाए जा रहा था।

बच्चे को पुस्तकालय ले जाया गया। उसे बताया कि यह हमारा पुस्तकालय है और यह रहीं हमारी लाइब्रेरियन लरीसा वसील्येव्ना। उनको देखते ही बच्चा ऐसा चिल्लाया: "बुक, बुक ..." तब पता लगा कि उसे किसकी ज़रूरत थी।

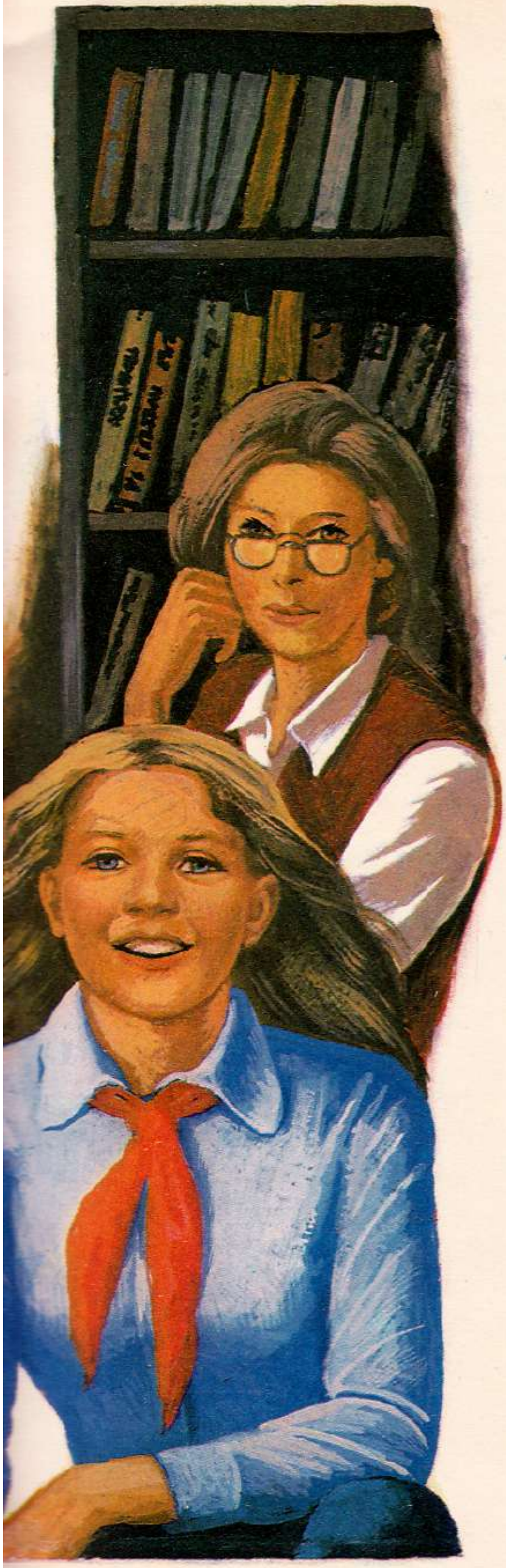

और वोलोद्या-सूरज, दूसरों से क्या बुरा है उसमें? वोलोद्या इलेक्ट्रीशियन है। कमरों में जा-जाकर मालूम करता है: "सारे 'सूरज' जलते हैं या नहीं?" "सारे जलते हैं," बच्चे एक स्वर में जवाब देते हैं। और अगर कोई 'सूरज-लैंप' जलता न हो तो वोलोद्या नया लगा देता है।

या फिर दल की लीडर स्वेता को ही लें। हंसमुख – एक, सबसे निर्भीक – दो, साथ ही हंगेरियन भाषा भी जानती है – तीन, कातालीना के साथ उसकी मातृभाषा में ही बात करती है।

इस तरह सब मिलाकर हुए: बावर्ची आंद्रेई मक्सीमोविच, लाइब्रेरियन लरीसा वसील्येव्ना, इलेक्ट्रीशियन वोलोद्या और दल लीडर स्वेता! इन चारों में से कौन है उसका उपहार पाने के लिये सबसे योग्य?

सागर के तट पर बैठी कातालीना सोच रही थी कि शीघ्र ही वह शिविर से चली जाएगी और अभी तक निश्चय नहीं कर पाई कि किसे कबूतर दे। सागर कह रहा है: "शू-ऊ-ऊ ..."। और वह सागर को उत्तर दे रही है: "शू-ऊ-ऊ ..."। अगर पास खड़े होकर सुनो तो लगेगा कि बच्ची सागर के साथ फुसफुसाकर बात कर रही है। पर इस बातचीत का विषय क्या है, यह समझ में नहीं आता: "शू-शू" और "शू-शू" चल रही है। वास्तव में कातालीना सागर के साथ सलाहमशविरा कर रही है कि किसे कबूतर उपहार में दे। अचानक उसे सुनाई दिया:

"ओ कातालीना!"

यह क्या सागर इंसान की भाषा में बोल पड़ा? नहीं, यह तो स्वेता है, उसके दल की

लीडर। वह तट पर पहुंची और कातालीना को देखकर बोल पड़ी। निकट आई और साथ बैठ गई।

"क्या सोच रही हो?" स्वेता ने पूछा।

"कबूतर के बारे में," कातालीना ने जवाब दिया, "समझ में नहीं आता कि किसको उपहार में दूं।" और उसने सब कुछ दल लीडर को बता दिया।

"अच्छा," स्वेता ने कहा, "चलो साथ मिलकर सोचें। आंद्रेई मक्सीमोविच वास्तव में अच्छे आदमी हैं। हमारे इस 'समुद्री' शिविर में वे सबको पेट भर स्वादिष्ट भोजन खिलाते हैं। पर जानती हो, कातालीना, कि हमारे देश में एक ऐसा इंसान हुआ था जिसने लाखों भूखे और नंगे लोगों को रोटी दिलवाई और उन्हें जूते तथा कपड़े दिलवाए। वोलोद्या-सूरज भी बहुत अच्छा आदमी है पर वह तो तुम्हारे लिये और बीसेक दूसरे बच्चों के लिये ही 'सूरज' जलाता है। लेकिन एक ऐसा इंसान था जिसने हमारे पूरे के पूरे इस असीम देश – सोवियत संघ – के ऊपर ऐसे ही 'सूरज' जलाए। लरीसा वसील्येव्ना भी अच्छी हैं लेकिन उनकी दी हुई किताबें तो केवल हमारा शिविर ही पढ़ता है। परंतु जिस इंसान के बारे में मैं बोल रही हूं, उसने तो करोड़ों अनपढ़ लोगों को पढ़ना-लिखना सिखा दिया है। मैं दल लीडर हूं। और इस शब्द का अर्थ होता है – पथप्रदर्शक, जो दूसरों को राह दिखाता है। और मैं तुमको और तुम्हारे जैसे बीसेक अन्य बच्चों को रास्ते पर आगे ले जाती हूं। और वह इंसान भी लीडर था। वह हमारे संपूर्ण देश का नेता था। और सबको सुख और सौभाग्य का रास्ता दिखाता रहा। काता-लीना, हमारा आर्तेक भी इसी सुख और सौभाग्य का एक हिस्सा है जिसे उसके आदेश पर बच्चों को उपहार में दिया गया है। चलो मेरे साथ। तब तुम आर्तेक के सबसे प्रिय व्यक्ति को देख पाओगी।"

पहाड़ी पर चढ़कर वे अलाव वाले मैदान में पहुंचे।

"देखो," दल लीडर स्वेता ने अपने हाथ से ऊपर की ओर इशारा करके कहा।

और वहां पहाड़ी के शिखर पर दोपहर में सूर्य के प्रकाश से आलोकित व्लादीमिर इल्यीच लेनिन की प्रतिमा बिल्कुल जीवित लग रही थी।

प्रसिद्ध हमनाम

कभी-कभी मां-बाप, दादी या दादा बच्चों को अपने प्रिय वीर, लेखक, अभिनेता या यात्री का नाम देते हैं। आर्तेक में आए हुए एक बच्चे को उसके दादा ने अपने एक जंगी दोस्त तिमूर का नाम दिया। दादा तो बहुत पहले स्वर्ग सिधार चुके हैं और तिमूर सोरोकिन को याद तक नहीं कौन-से दोस्त के बारे में दादा ने उसे बताया था।

एक दिन नाश्ते के बाद बिगुलों से 'मार्च' की धुन बजने लगी और दल को शिविर पर ले जाया गया। सागर के किनारे-किनारे चलते रहे और फिर ऊपर एक छोटे-से मैदान पर पहुंचे। इसके चारों ओर पहरेदारों की तरह दक्षिणी पेड़ लगे थे: चनार और सुरद्रुम के। पर इन पेड़ों से बच्चे इतना आकर्षित नहीं हुए जितना कि दूसरी एक गंभीर वस्तु से। मैदान के बीच में फूलों की एक क्यारी लगी थी और उस में कैना के गहरे लाल रंग वाले फूलों से घिरी पत्थर की एक सिल्ली खड़ी थी। यह सिल्ली रीछ पहाड़ी से काटकर तैयार की गई थी। संगमरमर के पट्ट पर ये शब्द खुदे हुए थे: "वे आर्तेकवासी थे"। तिमूर ने एक नाम देखा और उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा। यह नाम था: तिमूर फ्रूंज़े। हो सकता है कि इसी प्रसिद्ध हमनाम के सम्मान में उसे अपना नाम मिला? उसने दल लीडर के शब्दों को सुनने का निश्चय किया।

"तिमूर फ्रूंज़े," दल लीडर ने कहा, "ऐसे व्यक्ति के परिवार में पैदा हुआ था जिसे आप सब जानते हैं। यह थे गृह युद्ध के अभूतपूर्व सेनापति मिख़ाईल वसील्येविच फ्रूंज़े।"

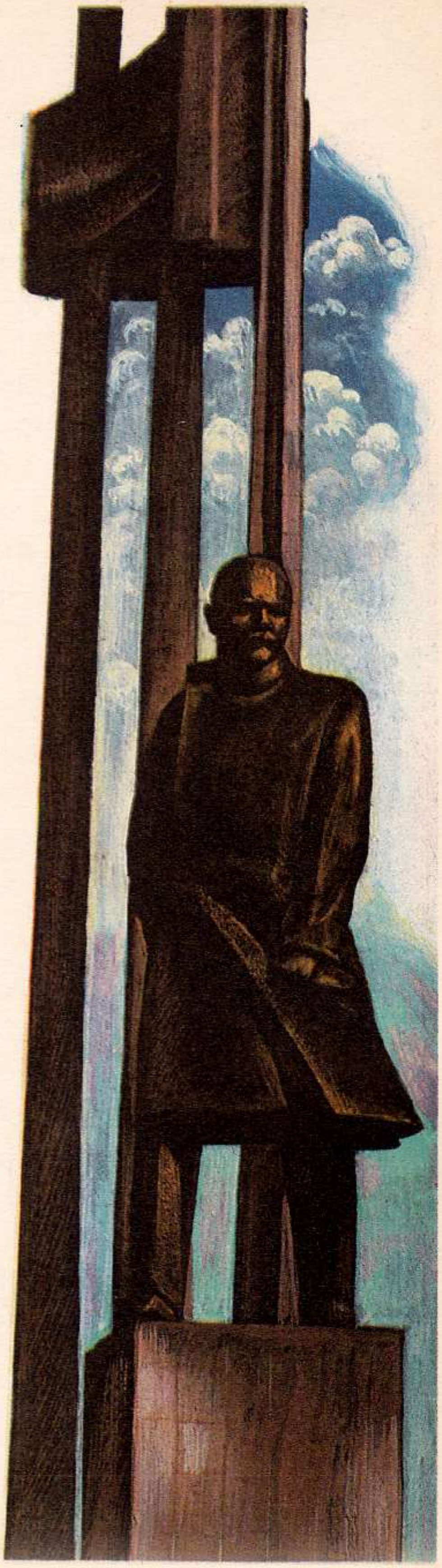

"अक्तूबर सन् 1917 में रूस के मज़दूरों और किसानों ने जमींदारों व पूंजीपतियों की सरकार गिराई थी। यह हुई महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति। परंतु अपनी ज़मीनों और कारखानों से हाथ धोकर बड़े-बड़े मालिक शांत बैठने को तैयार नहीं थे। उन्होंने अपने अश्व-बल से क्रांति का गला घोंटने की ठानी और देश में गृह युद्ध छेड़ दिया। क्रांति की उपलब्धियों की रक्षा करने के लिये मज़दूरों और किसानों ने लाल सेना का गठन किया। इसी के एक कमांडर थे मिख़ाईल वसील्येविच फ़्रूंज़े।

तिमूर फ़्रूंज़े की अल्प आयु में ही उसके मां-बाप का देहांत हो गया था और उसका व उसकी बहन का पालन-पोषण लाल सेना के एक अन्य सेनापति – क्लिमेंत येफ़्रेमोविच वोरोशीलोव – ने किया था।

सन् 1935 की गर्मियों में तिमूर आर्तेकवासी बना। और आर्तेक में वह पूरे समय बच्चों का रिंग लीडर बनकर रहा।

तिमूर के लिये विश्व की सबसे प्रिय वस्तु थी हवाबाज़ी। च्कालोव, ग्रोमोव और कोक्कीनाकी जैसे प्रसिद्ध सोवियत विमान चालक उसके बचपन के नायक थे।

सन् 1937 में दोनों महाद्वीपों में लोगों ने वीरों – वालेरी च्कालोव, मिख़ाईल ग्रोमोव और व्लादीमिर कोक्कीनाकी का कितना शानदार अभिनंदन किया था। और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं! सोवियत विमान चालकों द्वारा तय की गई मास्को – उत्तरी ध्रुव – अमरीका की अविराम उड़ान उस ज़माने के लिये वीरता का एक कारनामा था।

तिमूर फ़्रूंज़े भी विमान चालक बन गया। और महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध (1941-1945) ने उसकी उड़ान भरने में निपुणता की परीक्षा ली। अट्ठारह साल की कच्ची उम्र से ही तिमूर फ़्रूंज़े ने शत्रु के जहाज़ों को गिराना शुरू कर दिया!

स्ताराया रूस्सा शहर के पास 19 जनवरी सन् 1942 की बात है। तिमूर फ़्रूंज़े अपने लड़ाकू जहाज़ को शत्रु के बमवर्षक जहाज़ों के सामने ले गया। मुठभेड़ बड़ी प्रचंड और भयानक रही। जर्मन जहाज़ों की संख्या आठ थी। सोवियत हवाबाज़ तो केवल दो ही थे – तिमूर फ़्रूंज़े और विमान चालक शूतोव। पहले एक जर्मन जहाज़ गिरा, फिर दूसरा, पर तभी मुठभेड़ में शत्रु के लड़ाकू विमान आ पहुंचे और तिमूर फ़्रूंज़े के जहाज़ पर टूट पड़े ... एक वीर की तरह से तिमूर ने युद्ध स्थल पर ही अपने प्राण त्याग दिए पर वह रण क्षेत्र में पीछे नहीं हटा। तिमूर को मरणोपरांत देश के सर्वोच्च पदक – 'सोवियत संघ का वीर' – से सम्मानित किया गया।

"स्ताराया रूस्सा!" तिमूर सोरोकिन को याद आया कि उसने यह नाम सुना है। लेकिन कब और किससे? दादा से! जब वह छोटा-सा था तो दादा उसे युद्ध के बारे में बताते हुए अक्सर स्ताराया रूस्सा का नाम लेते थे। दादा युद्ध में विमान चालक थे। और वे इस शहर के ऊपर लड़े

थे। तिमूर फ़ूंज़े भी युद्ध में विमान चालक था। और वह भी स्ताराया रूस्सा के ऊपर ही लड़ा था। तो अब पता चला कि किसके सम्मान में उसका नाम तिमूर रखा गया ...

किरण और माचिस की तिल्ली

अलाव जलाना और फिर उनके निकट आग सेंकना सारे बच्चों को पसंद होता है। वान्या निकीतिन भी अलाव का शौक रखता था। इसीलिये आर्तेक पहुंचते ही वह अलाव वाले मैदान को ढूंढ़ने भागा।

जब ढूंढ़ लिया तो शुरू में तो उसे विश्वास तक न हुआ कि यही है अलावों की जगह। वास्तव में तो मैदान कुछ स्टेडियम जैसा लगता था। ठीक वैसी ही ऊपर को उठती हुई बेंचों की कतारों सहित। बस स्टेडियम का क्रीड़ा स्थल ही वान्या को आम क्रीड़ा स्थल से कुछ छोटा लगा। पर उत्सव के दिनों में इसी मैदान में अलाव जला करते थे।

मैदान के बीच सूखी लकड़ियों और टहनियों को पिरैमिड के रूप में लगाया हुआ था। लकड़ियों के ढेर से कुछ ही दूर दो बच्चे उकड़ूं बैठे थे। इनमें से एक सुनहरे और दूसरा काले बालों वाला था। वे वहां कुछ करने में व्यस्त थे।

"यह अलाव है न?" वान्या ने लड़कों से पूछा।

"भावी अलाव," एक लड़के ने जवाब दिया। "और तुम नए हो क्या?"

"नया हूं," वान्या ने सिर हिलाकर जवाब दिया।

"लो तुम लोगों के लिये ही है यह अलाव। नये आर्तेकवासियों के लिये।"

"और तुम कौन हो, पहरेदार क्या?" वान्या ने पूछा।

"कैसा पहरेदार?" काले बालों वाले ने आश्चर्य से पूछा।

"अलाव के पहरेदार," वान्या बोला।

दोनों लड़के हंस पड़े।

"हमारे यहां, आर्तेक में पहरा नहीं दिया जाता। हमारे यहां सब कुछ खुला है, सारे के सारे दरवाज़े। आखिर किससे रक्षा करनी है? अपने आपसे क्या? आर्तेक तो हमारा ही है।"

"तो फिर तुम क्या कर रहे हो?" वान्या ने पूछा।

"आग पैदा कर रहे हैं, इस लैंस को देख रहे हो?"

"देख रहा हूं," उसके हाथों में उभारदार लैंस को गौर से देखते हुए वान्या ने कहा।

"इसकी सहायता से हम सूर्य की किरणों को कागज़ पर केंद्रित करके उसे जलाएंगे," काले बालों वाले ने कहा, "और फिर कागज़ से इस मशाल को, देख रहे हो? मशाल से फिर अलाव ... इस तरह अलाव सूर्य से जलेगा, समझे?"

वान्या ने कुछ हैरानी के साथ अपने कंधे उचकाए।

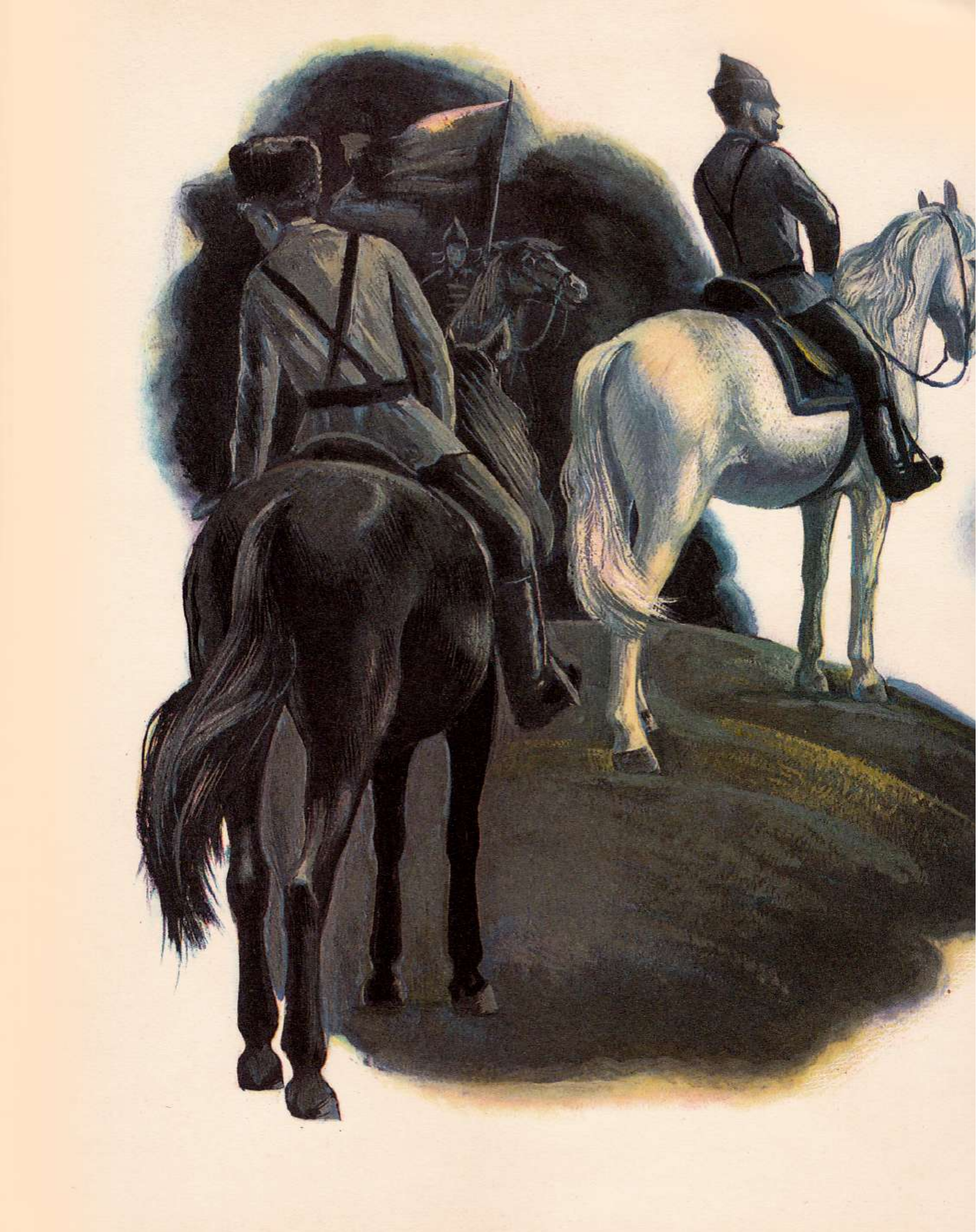

1937

"पर सूर्य से ही क्यों? इतनी मेहनत करनी पड़ेगी। माचिस से बेहतर होगा। लो, मेरे पास है।" और उसने उन लड़कों की तरफ़ माचिस की एक डिबिया बढ़ा दी।

दोनों लड़कों ने अपनी भौंहें सिकोड़ीं।

"माचिस से नहीं जलाया जा सकता है!" एक ने कहा।

"माचिस से जलाना प्रतीकात्मक नहीं!" दूसरे ने बात मिलाई।

"जीवन तो सारा का सारा सूर्य से ही पैदा हुआ है!" पहले ने कहा।

"हमारा अलाव भी। अब समझे?" दूसरे ने पूछा।

"अब समझा," वान्या ने कहा और माचिस छिपा ली। "मैं क्या तुम लोगों की कोई सहायता कर सकता हूं?"

"लो, इस मशाल को पकड़ो," उजले बालों वाले लड़के ने कहा। सागर की तरफ़ से अचानक चली हवा के रास्ते में उसने अपने शरीर से दीवार-सी बनाई और फिर लैंस से सूर्य की किरणों को केंद्रित करने लगा।

भेंट

यों तो आर्तेक देखने में बहुत रंग-बिरंगा लगता है। पर आज एक ही रंग का बोलबाला है। वह है – लाल रंग। बच्चों के इस राज्य के तट पर 'विजय अमर रहे!' पर्व के अलाव धधक रहे हैं। ये अलाव 'अज्ञात मल्लाह' की समाधि पर जली हुई अमर ज्योति से जलाए गए हैं। वे महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध में फ़ासिस्ट जर्मनी पर सोवियत जनता की विजय के उपलक्ष्य में जल रहे हैं।

सोवियत जनता द्वारा मनाए जाने वाले सारे त्योहारों में से विजय दिवस का विशेष स्थान है: यह शोकजनक होने के साथ-साथ आनंदमय भी है। शोकजनक इसलिये कि इस दिन, यानी 9 मई को, महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध में हताहत हुए सैनिकों की स्मृति में सोवियत संघ के कोने-कोने में एक मिनट के लिये मौन धारण किया जाता है। और आनंदमय इसलिये कि 9 मई सन् 1945 का दिन कठिन युद्ध का अंतिम दिन था, अर्थात फ़ासिस्ट जर्मनी पर विजय का दिन। यही था वह दिन जब फ़ासिस्ट खतरे से यूरोप को बचाया गया था। और अब इस दिन सोवियत जनता दृढ़ता से एक बार फिर कहती है: "युद्ध को नहीं होने देंगे!"

...बड़े-बड़े गुब्बारे आसमान की ओर उठ रहे हैं। ये केवल गुब्बारे ही नहीं बल्कि गुब्बारेनुमा डाकिये हैं। और वे आर्तेक के बादल रहित आकाश में यों ही उड़ नहीं रहे हैं परंतु असाधारण पतों वाले पत्र ले जा रहे हैं: दुनिया भर के लोगों को आर्तेक के बच्चों की ओर से। इन पत्रों में लिखे हैं फ़ासिज़्म और युद्ध के विरोध में संघर्ष के नारे।

सागर में नावें तैर रही हैं। इनमें हैं सारी दुनिया से आए अलग-अलग वर्ण और अलग बालों

के रंगों वाले बच्चे। उनके हाथों में फ़ासिस्ट जर्मनी से लड़ाइयों में हताहत हुए नौसैनिकों की स्मृति को अर्पित करने के लिये फूलों की मालाएं हैं। अब ये मालाएं सागर में डाल दी जाएंगी और सागर की लहरें इस अमूल्य उपहार को पाकर विश्व के अलग-अलग देशों के तटों तक पहुंचा देंगी।

... मास्को से आर्तेक जाते हुए ओल्या गोलोवानोवा को आशा थी कि वह बर्लिन से आए अपने मित्रों से मिल सकेगी। बात यह है कि मास्को के उसके स्कूल और बर्लिन के एक स्कूल ने 'विजय अमर रहे!' नामक त्योहार को आरंभ किया था। इन दोनों स्कूलों ने सारे समाजवादी देशों के बच्चों से अपील की थी कि फ़ासिस्ट जर्मनी की पराजय की 30वीं वर्षगांठ को वे सभाओं और कंसर्टों से मनाएं। और इसका सबसे मुख्य उत्सव आर्तेक में मनाया जाए।

और अब ओल्या आर्तेक में है—बारह, तेरह, चौदह और पंद्रह वर्ष की आयु वाले बच्चों के विशाल मानवरूपी सागर में एक छोटी-सी बूंद।

याद आया कि बच्चों ने उसे मास्को से जाते हुए कहा था:

"गाना ही तुम्हारी मदद करेगा। हमारा गाना एक ही है। उससे तुम ढूंढ़ लोगी।"

लेकिन कैसे ढूंढ़ा जाए? खड़े होकर गाना गाया जाए क्या? इस पर तो सब हंसने लगेंगे। ख़ैर फिर भी शिविर पर चलते हुए धीरे-धीरे गाने की ठानी। गाना शुरू ही किया था कि फ़ौरन जानी-पहचानी धुन सुनाई दी। गोल-मटोल चेहरे वाला एक लड़का बेहिचक गा रहा था:

"'नीले सोते से होती शुरू नदी...'"

पर यह लड़का तो कभी भी जर्मन नहीं हो सकता था। वह तो रूसी ही है। पास से निकल गई और अचानक सुनाई दिया कि कोई टूटी-फूटी रूसी में वही गीत गा रहा था। गरदन घुमाकर देखा। गीत गाने वाले लड़के के साथ आर्तेक की नीली वर्दी पहने एक लड़की खड़ी थी। वह उस लड़के की तरफ़ ख़ुशी से एकटक देख रही थी। जब गीत समाप्त हुआ तो उससे पूछा कि वह मास्को से तो नहीं?

"नहीं," लड़के ने जवाब दिया, "मैं कोस्त्रोमा शहर से हूं।"

"मास्को से तो मैं हूं," ओल्या ने फ़ौरन पास आकर जवाब दिया। "और तुम क्या बर्लिन से आई हो?"

"हां, बर्लिन से!" लड़की ने ख़ुश होकर कहा।

तो ऐसे वे मिल ही गईं, मास्को से ओल्या गोलोवानोवा और बर्लिन से फ्रान्नी मार्तेन, 'विजय अमर रहे!' उत्सव के आरंभक।

और पूरे तीस के तीस दिन वे एक दूसरे के पास रहीं। जब 'विजय अमर रहे!' उत्सव में दुनिया भर के बच्चे आर्तेक के स्टेडियम में खड़े होकर नारे लगाते तो इन दोनों की आवाज़ें भी एकसाथ कहतीं: "युद्ध मुर्दाबाद!"

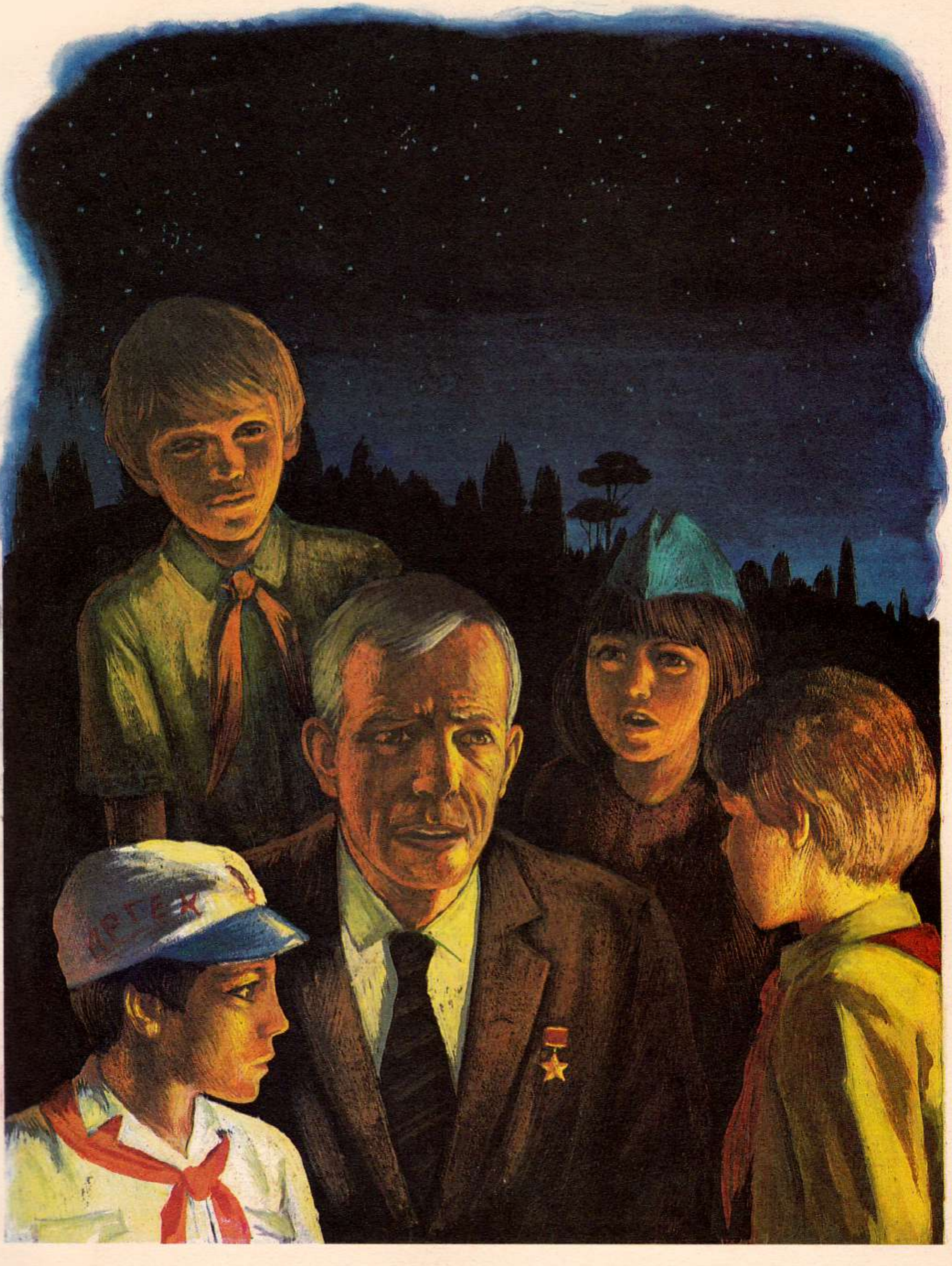
АРТЕК

फ़ांसीसी बच्चों में से सिमोना पास्तेर सबसे छोटी है। छोटी है पर गुणों का सागर! सबसे तेज़ और सबसे अधिक जिज्ञासु। संयोग से एक बार उसने बर्फ़ीली लड़की के बारे में रूसी परीकथा की फ़िल्म देखी। यह भी देखा कि किस प्रकार बर्फ़ीली लड़की वसंत में अलाव के ऊपर से छलांग लगाती थी। सिमोना पास्तेर का भी जी किया बर्फ़ीली लड़की बनने का। बस, उसने बच्चों को अलाव के लिये लकड़ी जमा करने को तैयार कर लिया। अलाव भी जलने लगा।

"चलो, छलांग लगाओ! चलो!" सिमोना चिल्लाने लगी।

पर छलांग लगाने को कोई तैयार नहीं। डर लगता है। तब सिमोना भागकर आई और उसने सबसे पहले अलाव के ऊपर से छलांग लगा डाली। उसके बाद दूसरों ने भी ऐसा ही किया। पर तभी दल लीडर ज़ोया दौड़कर वहां पहुंची और उसने बच्चों को रोक दिया। बच्चों के लिये तो यह खेल था और उसके लिये – मुसीबत। कहीं कोई आग में न जल जाए! और इस सब की जड़ थी सिमोना, बच्चों में सबसे चतुर। एक जगह पर खड़ा होना या बैठना तो उसके लिये संभव ही नहीं था: या तो बंदर की तरह से सबसे ऊंचे पेड़ पर चढ़ी होती और या फिर सागर में डॉलफिन की तरह तैरकर सबसे दूर निकल जाती।

पर सिमोना केवल साहसी और फ़ुरतीली ही नहीं, परंतु जिज्ञासु भी है। एक बार उसने दल लीडर ज़ोया से 'अंतरराष्ट्रीय संघ' के बारे में पूछा। उसने यह शब्द आर्तेक में कई बार पोस्टरों पर पढ़ा था।

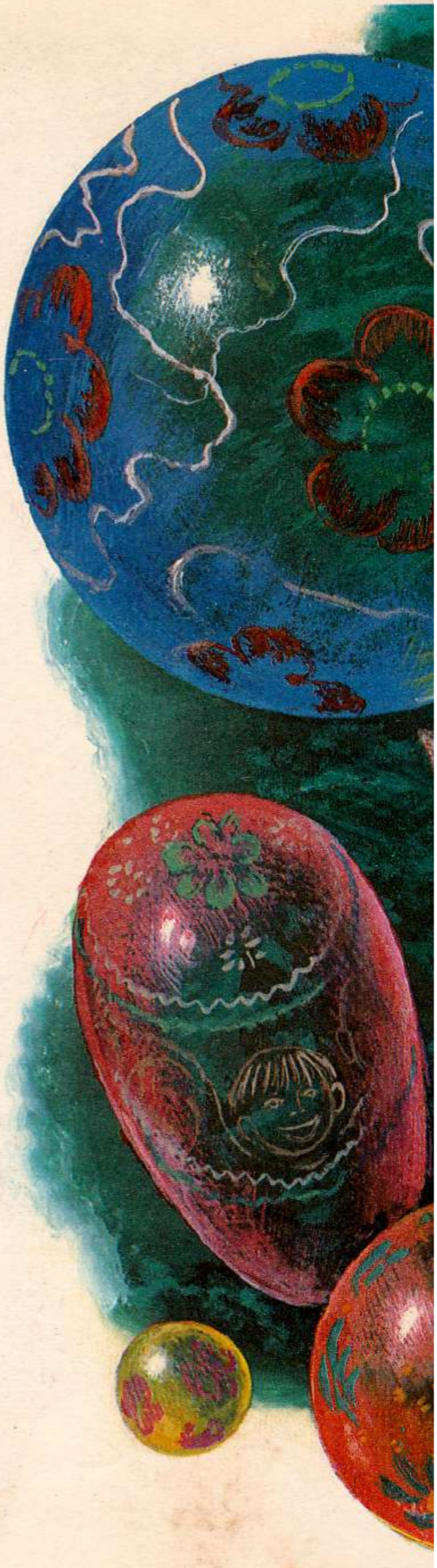

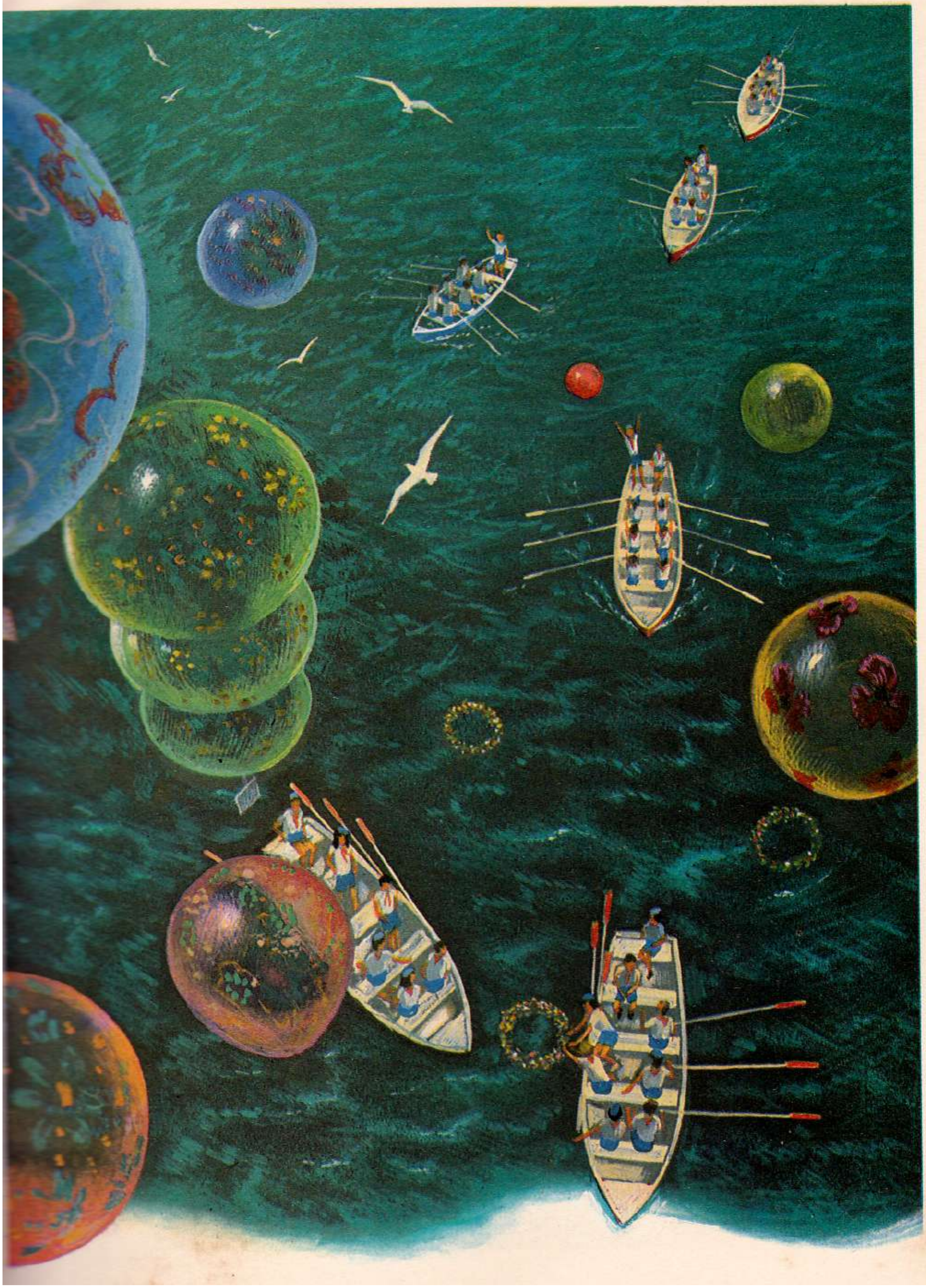

दल लीडर ज़ोया तो सब कुछ जानती है। इसीलिये ही वह आर्तेक की दल लीडर है ताकि सब कुछ जाने और फिर बच्चों को यह सब सिखाए। वह जानती है कि किस प्रकार अलाव सुलगाया जाता है और किस प्रकार उसमें आलू भूने जाते हैं। किस प्रकार रस्सियों में तरह-तरह की गांठें लगाई जाती हैं और किस प्रकार मछली कांटे से पकड़ते हैं। कैसे भिन्न-भिन्न प्रकार के खेलों को खेला जाता है। वह बच्चों को खिलौने बनाना सिखा सकती है। और, अगर कोई दुर्भाग्य से अपनी नाक फोड़ ले तो उसे मरहम-पट्टी करना भी सिखा सकती है। ज़ाहिर है कि ज़ोया 'अंतरराष्ट्रीय संघ' के बारे में अच्छी तरह जानती थी। तो उसने उत्तर दिया:

"'अंतर' का अर्थ होता है बीच। और 'राष्ट्र'—देश की जनता। यानी एक आम लक्ष्य के लिये अलग-अलग देशों की जनताओं का संगठन! समझी?"

"समझी, समझी," सिमोना बोली, "यानी कि हमारा आर्तेक भी अंतरराष्ट्रीय संघ है!"

"ठीक," दल लीडर ने पुष्टि की, "क्योंकि आराम करने के समय यह दुनिया भर के बच्चों को इकट्ठा करता है। तुम अनुमान लगा सकती हो कि आर्तेक का और कौन-सा लक्ष्य है?"

"अवश्य," सिमोना ने कहा, "बच्चों को सुख और स्वास्थ्य प्रदान करना।"

"केवल यही नहीं, आर्तेक का एक और लक्ष्य है, सबसे आवश्यक।"

"वह कौन-सा है?" सिमोना ने पूछा।

"अभी पता लगाते हैं," दल लीडर ने कहा। "देख रही हो कि वहां दूर अलाव वाले मैदान में बच्चे गुब्बारे उड़ा रहे हैं। चलो, वहां उनके पास चलते हैं।"

वे वहां पहुंचीं तो देखा कि ज़मीन पर अलाव में से धुआं उठ रहा है। अलाव के ऊपर रस्सियों से बंधा एक गुब्बारा लटका हुआ है। इसका नाम है मोंगोल्फ़ियर। जब वह गर्म हवा से भर जाएगा तो उड़ने लगेगा। गुब्बारा कागज़ का बना हुआ है और उस पर अलग-अलग भाषाओं में ये शब्द लिखे हैं: "हम शांति चाहते हैं!" और नीचे बहुत सारे हस्ताक्षर हैं। अलग-अलग देशों के बच्चों के हस्ताक्षर।"

"मैं भी हस्ताक्षर कर सकती हूं क्या?" सिमोना ने दल लीडर से पूछा।

"बिल्कुल," दल लीडर ने जवाब में कहकर सिमोना को एक लाल पेंसिल दी।

"सिमोना पास्तेर," फ़्रांसीसी युवती ने गुब्बारे पर हस्ताक्षर किए। तभी लड़के और लड़कियों ने गुब्बारे से बंधी रस्सियां छोड़ दीं और वह उड़ पड़ा। साथ ही वह दुनिया भर के लोगों के पास शुभ संदेश भी ले गया कि सारे आर्तेकवासी – रूसी, अंग्रेज़, फ़्रांसीसी, जर्मन, पोलिश और हंगेरियन – शांति चाहते हैं।

जब गुब्बारा उड़ गया तो दल लीडर ने सिमोना से पूछा कि उसकी नज़र में विश्व के बच्चों की मित्रता का मुख्य लक्ष्य कौन-सा है?

"शांति के लिये संघर्ष," सिमोना ने गुब्बारे की उड़ान को देखते हुए फ़ौरन जवाब दिया।

कलाबाज़ी का खेल

सागर में एक स्टीमर जा रहा था। वह एक सफ़ेद आईसबर्ग जैसा लग रहा था। वास्या आंद्रेयेव तट पर खड़ा स्टीमर को देख रहा था। और स्टीमर चलते-चलते धीरे-धीरे क्षितिज के पीछे जा छुपा।

वास्या आंद्रेयेव ने नज़र दौड़ाई तो एक ऊंचे-से पेड़ को देखा। लड़के ने अनुमान लगाया: "अगर ऊपर चढ़ा जाए तो क्षितिज के पार देखा जा सकता है।" बस वह पेड़ पर चढ़ा और फिर से स्टीमर को देखने लगा। पर तभी उसे किसी ने आवाज़ दी।

"वास्या आंद्रेयेव, पायोनियर-कक्ष में पहुंचो!"

वास्या आंद्रेयेव को बड़ा आश्चर्य हुआ। हो सकता है कि आर्तेक में पेड़ों पर चढ़ना मना है

पूरे सोवियत संघ और अनेकों देशों के बच्चे आर्तेक आते हैं। यहां पर वे एक बड़े अंतर्राष्ट्रीय परिवार के सदस्य बन जाते हैं।

और वह तो चढ़ चुका है। शायद किसी ने यह देख लिया और अब वास्या को बुला लिया गया है। बेहतर हो कि न सुनने का बहाना करके जाया ही न जाए? पर यह तो पायोनियर तौर-तरीकों के विरुद्ध होगा। जाकर अपनी गलती स्वीकार कर लेना ही बेहतर रहेगा। आखिर वह तो अभी-अभी आया है और यहां के कायदे-कानून नहीं जानता। बस यूं ही पेड़ पर चढ़ गया स्टीमर को एक बार फिर से देखने के लिये।

वास्या पेड़ से उतरकर पायोनियर-कक्ष की ओर दौड़ पड़ा। घुसते ही उसने साफ़ कहा:

"मैं ही पेड़ पर चढ़ रहा था।"

"तो कैसा लगा?" दल लीडर यूरा ने पूछा।

"क्या मतलब, कैसा?" वास्या सवाल समझ न पाया था अतः उसने पूछा।

"कैसा लगा पेड़ पर चढ़ना? सब ठीक तो है? अपने कपड़े तो नहीं फाड़े?"

वास्या ने अपने आपको टटोला और फिर मुस्कुरा दिया:

"कुछ फटा नहीं, सब साबुत है," उसने कहा और वह काफ़ी संतुष्ट हुआ कि डांट नहीं पड़ी, लेकिन मन ही मन में सोचा: "पर आखिर मुझे यहां क्यों बुलाया गया? और किसने बुलाया?"

दल लीडर यूरा ने अनुमान लगा लिया कि लड़का क्या सोच चुका था और उसने माइक्रोफ़ोन की तरफ़ इशारा करके कहा:

"यह हमारे शिविर का रेडियो है।"

"अब समझ में आया," वास्या ने सोचा, "दिखाना चाहते हैं कि रेडियो स्टेशन कैसा होता है। चलो यह तो मैं मज़े से देखूंगा।"

पर वास्या गलत निकला। उसे बिल्कुल दूसरे कारण से बुलाया गया था। दो दिन पहले ही दल में परिचय-समारोह हुआ था जिसमें नये बच्चों ने अपने-अपने बारे में बताया था और करतब दिखाए थे। कोई गाना गाता था, दूसरा नाचता था और कोई कविता सुनाता था। वास्या आंद्रेयेव की भी बारी आई।

"और तुम कौन-सा करतब जानते हो?" दल लीडर यूरा ने पूछा, "नाचना या गाना?"

वास्या ने बस अपने कंधे उचकाकर जवाब दिया। वह इनमें से कुछ भी करना नहीं जानता था।

"गीत गा सकते हो?" दल लीडर ने पूछा।

"नहीं," वास्या ने जवाब दिया।

"नाच?"

"नहीं।"

"बायान बजाना जानते हो?"

"नहीं।"

"तो आखिर आता क्या है तुम्हें?"

"हुक्म चलाना!" वास्या बोला।

"तो यह बात है!" दल लीडर ने चकित होकर कहा। "चलो फिर पंक्ति से बाहर निकलकर हुक्म दो।"

वास्या बाहर निकला और ज़ोर से चिल्लाया:

"व्यायाम के लिये खड़े हो! दाहिने घूम! गोल घेरा बनाते हुए दौड़ लगाओ!"

यह सब इतना अजीब और अचानक हुआ कि बच्चे खुशी से इस जोशीले आदेश को पूरा करते हुए गोल घेरा बनाने लगे।

तभी यूरा ने वास्या को अपने ध्यान में रख लिया और फ़ैसला किया कि बाद में उसे कोई ज़िम्मेदारी का कार्य देगा।

इसीलिये उसने वास्या को अभी बुला भेजा।

"तुम्हारी आवाज़ बहुत मधुर है," उसने कहा, "मैं चाहता हूं कि तुम हमारे अनाउन्सर बनो।"

खैर अनाउन्सर तो अनाउन्सर ही सही। वास्या तो साहसी इंसान है। उसने पहले कभी सागर देखा तक नहीं था पर आर्तेक में आकर सागर में कूदा और तैरने लगा। वह माइक्रोफ़ोन से भी डरेगा नहीं!

दल लीडर ने वास्या को बोलना सिखाया और फिर उसे टेक्स्ट देकर इशारा किया: "शुरू कर दो।"

वास्या ने माइक्रोफ़ोन लिया और मुंह के पास ले जाकर चुप्पी साध ली।

यूरा ने माइक्रोफ़ोन बंद करके पूछा:

"यह क्या हुआ तुम्हारे साथ?"

"हिम्मत ने जवाब दे दिया," वास्या ने उत्तर दिया।

"कोई बात नहीं, चलो फिर से प्रयास करें," दल लीडर ने कहा और फिर से माइक्रोफ़ोन चालू कर दिया।

"सुनिये, सुनिये," वास्या ने बोलना शुरू किया, "यह शिविर का रेडियो स्टेशन है। आज शाम को अलाव वाले मैदान में शौकिया कला का कंसर्ट होगा। पहले दल के पायोनियर अपने करतब दिखाएंगे..."

इस स्थान पर उसे रुककर एक बार फिर से दोहराना था। पर वास्या रुका नहीं और आगे बोलता रहा:

"और कात्या मलाखोवा से हमारा अनुरोध है कि वह इस कंसर्ट में कलाबाज़ी के करतब दिखाए।"

दल लीडर यूरा ने माइक्रोफ़ोन बंद करके उसे गुस्से से कहा:

"शर्म नहीं आती! माइक्रोफ़ोन तो खिलौना नहीं! रेडियो में अपनी ओर से कुछ भी प्रसार करना सख्त मना है!.."

"मैंने अपनी ओर से नहीं," वास्या ने कहा, "मैंने सबकी ओर से कहा है। कात्या कलाबाज़

है पर अपने करतब दिखाना शर्माती है। मैंने उससे अनुरोध किया था पर उसने मना कर दिया। अब जबकि सब उससे अनुरोध कर रहे हैं, वह मना नहीं करेगी।"

और कात्या ने भी मना नहीं किया।

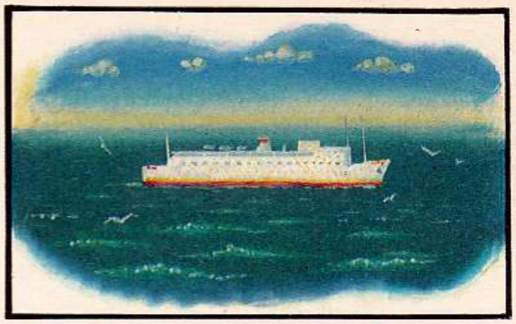

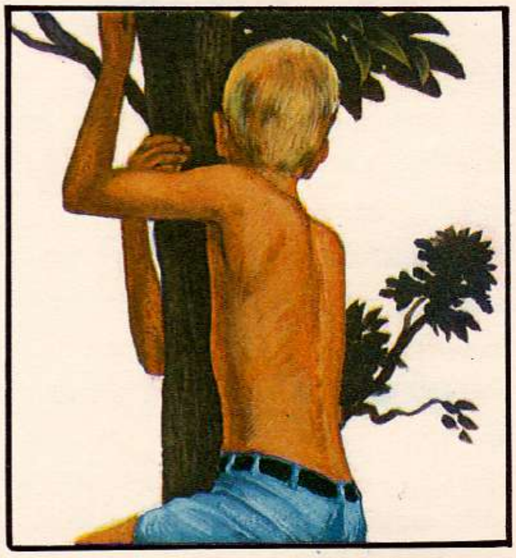

तिलस्मी घर

पहाड़ी के नीचे कांच का बना एक घर खड़ा है।

"यह क्या है?" आर्तेक से परिचय करते समय वीका ने दल लीडर से पूछा।

"आर्तेक की सबसे तिलस्मी जगह," दल लीडर ने जवाब दिया।

"इसलिये कि पारदर्शक है," वीका ने अनुमान लगाकर कहा, "और सारे के सारे आर्तेक को देखा जा सकता है: यहां की पहाड़ियां, सागर और जंगल – सब के सब।"

"न केवल आर्तेक," दल लीडर ने कहा, "इस घर से तो सारे संसार को देखा जा सकता है।"

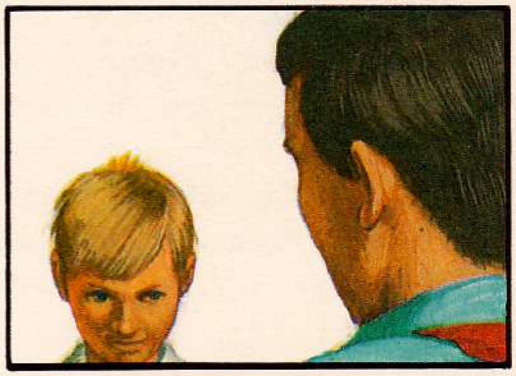

वीका ने उस मकान में घुसकर फ़ौरन सारे संसार को देखना चाहा। वह कांच के घर के निकट पहुंची। "पुस्तकालय," वीका ने अनुमान लगाया।

कांच के दरवाज़े को खोलते ही उसने अपने आपको किताबों के संसार में पाया। शेल्फों में से पुराने जाने-पहचाने उसकी ओर देख रहे थे: रॉबिनसन क्रूसो, गुलीवर, टॉम सॉयर, टॉम थम्ब, रुस्लान और ल्युद्मीला, तांबे के पहाड़ की मालकिन, राजकुमार इवान।

महावीर रुस्लान और सुंदरी राजकुमारी

ल्युद्मीला अ० पुश्किन के काव्य 'रुस्लान और ल्युद्मीला' के नायक और नायिका हैं। तांबे के पहाड़ की मालकिन – रूसी परीकथाओं में सारे भूमिगत भंडारों की अत्यंत सुंदर मालकिन है। वह सिर्फ़ दयालु, ईमानदार और निःस्वार्थ लोगों के आगे अपने अपार भंडार खोल देती थी। राजकुमार इवान बहुत-सी रूसी लोक कथाओं का प्रसिद्ध नायक है।

वीका ने चकित होकर पूछा कि किताबें बच्चों के पास होने के बजाय यहां पुस्तकालय में क्यों हैं?

"शायद इसलिये," लाइब्रेरियन ने जवाब दिया, "कि नये बच्चे अभी तक यहां नहीं आए।"

वीका एक किताब लेकर दल के पास गई। रात के खाने से पहले उसने पूछा कि कौन-कौन पुस्तकालय गया था? पता चला कि कोई भी नहीं।

वीका को बहुत बुरा लगा और वह सोचने लगी: किस तरह बच्चों को पुस्तकालय की तरफ़ आकर्षित किया जाए?

अगले रोज़ सुबह उसने अपने दल के बच्चों को इकट्ठा किया और हरेक को एक-एक परचा दिया। उनमें लिखा था: "प्यारे मित्र! मेरा तुमसे अनुरोध है कि आज पुस्तकालय अवश्य आओ।" निमंत्रणपत्रों पर भिन्न-भिन्न हस्ताक्षर थे: एक निमंत्रण-पत्र पर लिखा था "रॉ० क्रूसो", दूसरे पर – "टॉ० सॉयर", तीसरे पर – "राजकुमार इवान" ... "पर यह तो बताओ कि पुस्तकालय कहां है?" बच्चे चिल्लाए। और नाश्ते के बाद सारा का सारा दल पुस्तकालय की ओर चल दिया।

वीका बच्चों को अपने परिचित कांच के दरवाज़े तक ले आई।

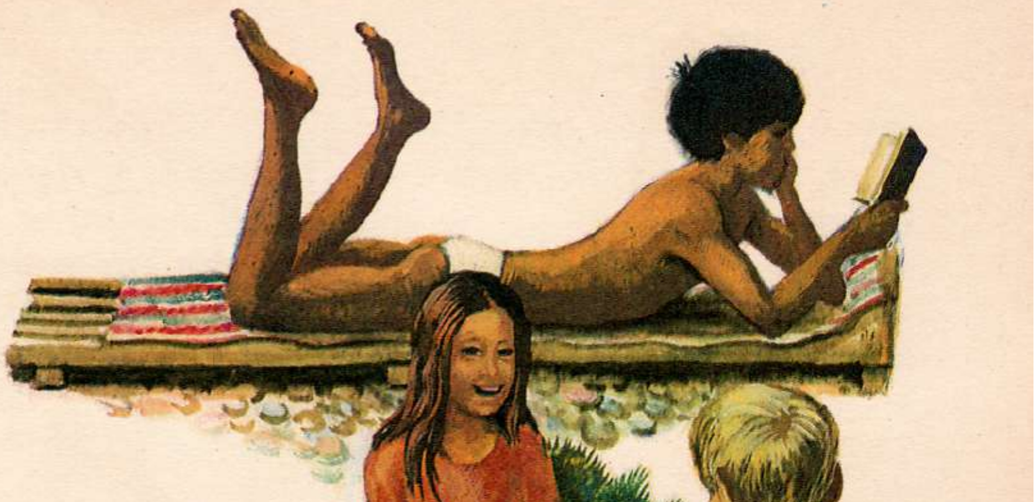

संगीत सुनने की क्षमता और आवाज़

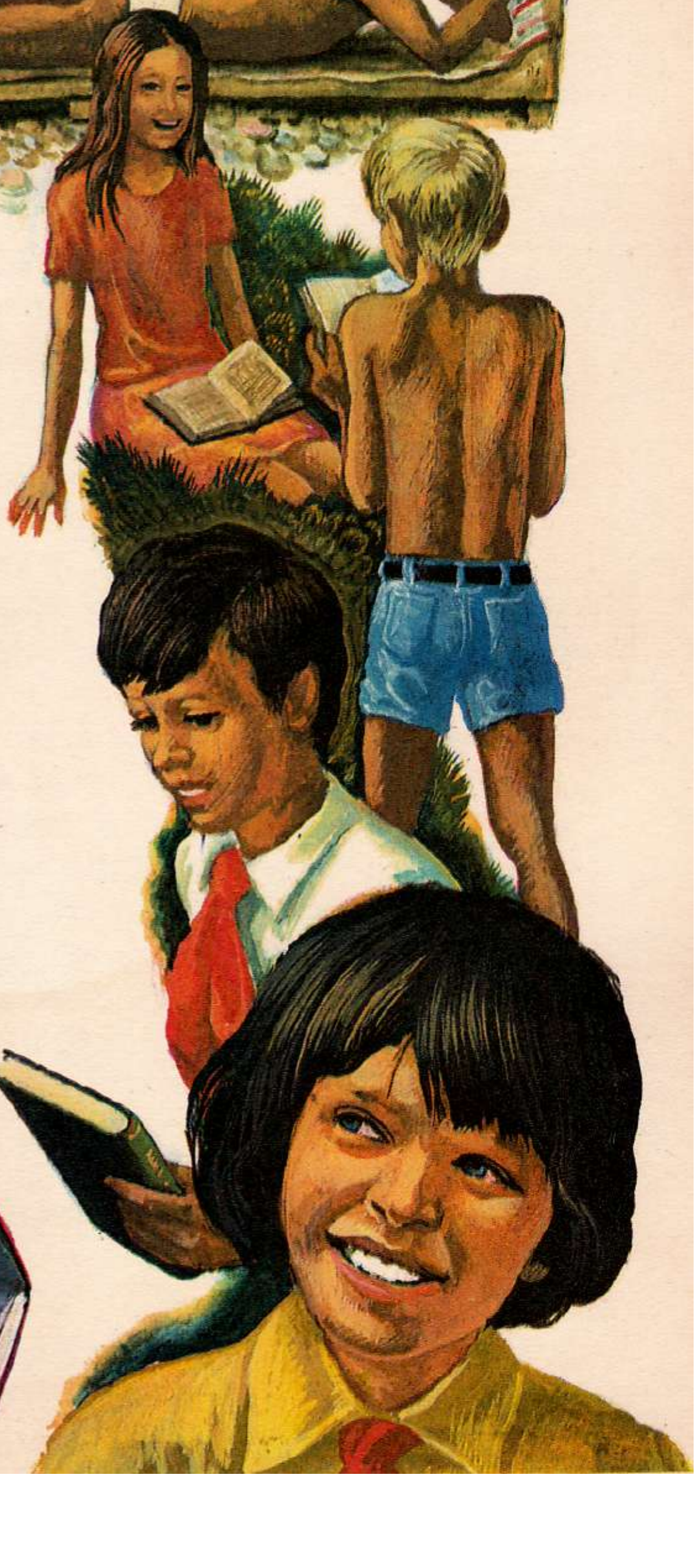

आर्तेक में सब गाना गाते हैं यहां तक कि वे भी जो गा नहीं पाते।

वोल्गोग्राद से आए हुए वोलोद्या स्मिरनोव ने पहले कभी भी गाया नहीं था। जब भी उसे स्कूल की गायक मंडली में बुलाया जाता, वह कहकर टाल देता कि उसकी संगीत सुनने की क्षमता है ही नहीं। वह हमेशा ट्रांज़िस्टर चलाता और सुनते हुए सोचता कि स्वयं गाने की आवश्यकता ही क्या है जब दूसरे यह तुम्हारे लिये कर रहे हैं।

जब आर्तेक जा रहे थे तो भी वोलोद्या ने गीत नहीं गाए हालांकि दूसरे बिना विराम के

गाए जा रहे थे। "संगीत सुनने की क्षमता नहीं है," वह बहाना बनाता रहता।

लो आर्तेक भी आ गया। बिल्कुल गीत जैसा। वोलोद्या को पहाड़ पर चढ़कर आर्तेक के जीवन-स्वर सुनना बड़ा पसंद था। सागर का शोर, चिड़ियाओं और बच्चों की आवाजें, संगीत के सुर, गाना-बजाना, स्टेडियम में दर्शकों के स्वर, दौड़ को आरंभ करने वाली पिस्तौल की ध्वनि, पेड़ों की सरसराहट, जहाज़ों की सीटियां – ये सब मिलकर एक बेहतरीन धुन में बदल जाते जिसे लगातार सुना जा सकता था। तो फिर उसे गाने की क्या आवश्यकता जबकि आस-पास सब कुछ स्वयं ही गा रहा है?

एक दिन उसे कहा गया: आर्तेक के स्टेडियम में रंगीन रंगों की टाइयों का उत्सव है अत: तैयार रहना!

"मैं तो यों ही हमेशा तैयार रहता हूं," वोलोद्या ने दल के अध्यक्ष को जवाब दिया।

"मुझे इसमें संदेह है," उसने उत्तर दिया, "हमें गाना भी गाना पड़ेगा।"

"पर मुझमें संगीत सुनने की क्षमता कहां," वोलोद्या ने भी एकदम जवाब ढूंढ़ निकाला।

"जानता हूं," दल के अध्यक्ष ने कहा, "पर बहरहाल तुम गीत के शब्द तो याद कर ही लेना," और यह कहकर उसकी तरफ़ एक परचा बढ़ा दिया।

"बहरहाल याद कर ही लूंगा!" वोलोद्या ने वचन दिया।

अगर वचन दिया है तो पूरा करना ही पड़ता है – यह पायोनियरों का आदर्श है।

और अब वह उत्सव में पहुंचा। मंच पर बैठा, नीचे हरे मैदान पर आसमानी रंग का झंडा फहरा रहा है। उसके पास से अलग-अलग राष्ट्रों के बच्चे गुज़र रहे हैं, बहुत-से बच्चे झंडे पर सफ़ेद रंग के कागज़ी कबूतरों को चिपका रहे हैं। उन पर दुनिया भर के बच्चों से मित्रता की अपी-लों के शब्द लिखे हुए हैं। आरंभ में गाना धीरे-धीरे चलता है, फिर ज़ोर पकड़ने लगता है, तेज़ होने लगता है और इतना तेज़ कि आस-पास की सारी आवाज़ों को दबा देता है। अपनी-अपनी जगहों से चार हज़ार लड़के और लड़कियां उठते हैं, एक दूसरे के कंधों पर हाथ रखते हैं और गाते चले जाते हैं मानो गीत उन्हें स्वयं ही खींच रहा हो।

वोलोद्या भी सबके साथ खड़ा हुआ और ताकि वह अलग न चमके गीत के साथ-साथ चुपचाप मुंह हिलाने लगा। पर अचानक उसे एहसास हुआ कि न गाना उसके लिये अब संभव नहीं। गीत के शब्द उसके मुंह से अपने आप ही निकलने लगे और वह... गाने लगा। उसे स्वयं अपने ऊपर आश्चर्य होने लगा। उसने नज़र दौड़ाई तो देखा कि रंगीन टाइयों वाले बच्चों का मानो सागर फैला है और नीचे एक और सागर है – काला सागर जो यूरोप के बहुत-से देशों के तटों को धोता है।

"मित्रता!"... "शांति!"... "स्वतंत्रता!"... "सुख!" – आर्तेक गा रहा है।

"मित्रता!"... "शांति!"... "स्वतंत्रता!"... "सुख!" – आर्तेक के शब्दों को वोलोद्या दोहरा रहा है।

गाने वाली मिट्टी

आर्तेक में बच्चे केवल बच्चे ही नहीं रहते हैं। यहां वे संगठित बच्चे बन जाते हैं। पायोनियरों को दस्तों में बांट दिया जाता है, दस्तों को दलों में और दलों को शाखाओं में। इन दस्तों के नाम हैं: तृणमणिक, हीरक, स्फटिक, वन्य, नदर, सरोवरी इत्यादि। गर्मियों में तीस दिन और सर्दियों में तो उससे भी अधिक, अर्थात चालीस दिनों के लिये, आर्तेक में आकर बच्चों को अपने लिये रुचिकर काम-काज ढूंढ़ना नहीं पड़ता। काम-काज स्वयं ही उनको ढूंढ़ लेता है।

दल में पायोनियरों के लिये बहुत सारे व्यवसाय हैं: दल की समिति के सदस्य, शाखाओं के लीडर, बिगुल वादक, ढोलची, गायक, अलाव जलाने वाले, खेल-कूद के आयोजक, सफ़ाई के निरीक्षक, टीमों के कप्तान, रेफ़री, खेलों के आयोजक और नृत्य के प्रबंधक ... पर कुछ ऐसा संयोग हुआ कि वीत्या कुछ देरी से आर्तेक पहुंचा जब "चिड़ियाएं खेत चुग चुकी थीं", यानी सारे के सारे काम-काज बांटे जा चुके थे।

"चिंता न करो," दल लीडर बोर्या ने कहा, "तुम तो गांव से आए हो न? तुम्हारे पिता जी सामूहिक फ़ार्म में काम करते हैं क्या?"

"जी हां, सामूहिक फ़ार्म में काम करते हैं," वीत्या ने उत्तर दिया।

"और क्या करते हैं?" दल लीडर ने पूछा।

वीत्या ने गुस्से से उत्तर दिया: "कितनी बार समझाऊं कि वह कृषक हैं।"

पर दल लीडर का धैर्य भी कम न था।

"घर आकर सब अपनी कोई न कोई रुचि पूरी करते हैं," उसने कहा। "चित्रकला या छाया चित्रण, मछलियां पकड़ते हैं ..."

"ओ, तो यह बात है!" वीत्या ने ताड़कर कहा। "वह मिट्टी की चीज़ें बनाते हैं ..."

"और तुम?" दल लीडर ने पूछा।

"और मैं भी," वीत्या ने संकोच के साथ कहा, "मैं भी बनाता हूं।"

"बहुत अच्छी बात है, तो यही बच्चों को सिखाओ," दल लीडर ने कहा।

वीत्या उत्तेजित हो उठा।

"अच्छा," उसने कहा, "मैं सिखा दूंगा, आप खुद ही सुन लेंगे ..."

दल लीडर को लगा कि वीत्या से ज़बान की गलती हुई। शायद "देख लेंगे" की जगह "सुन लेंगे" कह बैठा। अतएव उसने पायोनियर की भूल सुधार दी, पर वीत्या ने इस सुधार के आधे-भाग को ही स्वीकार किया।

"आप देखेंगे भी," उसने कहा, "और साथ-साथ सुनेंगे भी। मुझे थोड़ी-सी मिट्टी और प्लाइवुड का एक टुकड़ा चाहिए केवल।"

उसी दिन वीत्या ने चनार के एक फैले हुए पेड़ की छाया में बैठकर मिट्टी घोट ली। वीत्या को आटे के समान मिट्टी गूंधते हुए देखकर कुछ बच्चों ने मस्ती ली: "वीत्या मिट्टी से ... पकवान पकाना चाहता है। और अपने पकवान वह खुद ही खाएगा!"

शाखा के सारे बच्चे वीत्या को घेरकर कहने लगे: हमें भी तो दिखाओ और समझाओ कि तुम क्या बना रहे हो। और वीत्या बस कह देता:

"मिट्टी को गाना सिखा रहा हूं।"

मिट्टी को अच्छी तरह से मलकर उसने एक चपाती-सी बना दी। फिर अपनी उंगली पर इस चपाती को लपेटकर मोटी पेंदी वाले एक गिलास का जैसा आकार बना दिया। उंगली को बाहर निकाले बिना उसने एक छेद पेंदी में किया और दूसरा – किनारे पर। इसके बाद उंगली बाहर निकाल दी, किनारे वाला छेद बंद किया, नीचे वाले में फूंक मारी और ... मिट्टी गा उठी।

तब पूरी शाखा अनुरोध करने लगी:

"हमें भी सिखा दो! ... और हमें भी! ..."

"अच्छा," वीत्या ने कहा, "और तुम लोग मुझे क्या सिखाओगे?"

"चित्रकला ... गर्म औज़ार से लकड़ी पर तसवीरें बनाना ... लकड़ी को काट-काटकर आकृतियां बनाना ... छायाचित्रण ..."

पता चला कि हरेक को कुछ न कुछ आता था और हरेक कुछ न कुछ सिखा सकता था।

आर्तेक में अनगिनत मंडलियां हैं: मोटर चलाने की, वायु और जलयानों के मॉडेल बनाने की, छायाचित्रण की, राकेटों के मॉडेल बनाने की, सिनेमा की, मोटर गाड़ियों के मॉडल बनाने की, खेल और खिलौनों की, जानवर पालने की, स्थानीय इतिहास के अध्ययन की ... पर यदि कोई भी मंडली पसंद न आए तो बच्चे एक दूसरे को कुछ न कुछ दिखाते और सिखाते हैं। और वे बहुत-सी नयी-नयी बातें जानकर आर्तेक से जाते हैं।

साबा

आर्तेक में हरेक कुछ न कुछ लेकर ही आता है। कोई गाना लेकर आता है, कोई शिविर के संग्रहालय के लिये वस्तु, कोई अपनी बनाई चीज़ लाता, कोई तसवीर लाता, और कोई अपनी कढ़ाई का काम।

सोवियत संघ बहुत बड़ा देश है। और यहां पर अलग-अलग जातियों के लोग रहते हैं। हरेक की अपनी भाषा, अपनी पोशाक, अपनी परंपराएं और बच्चों के अपने खेल होते हैं। पर पंद्रह के पंद्रह जनतंत्र आपस में मित्रता से रहते हैं। सारे सोवियत जनतंत्रों के बच्चे आर्तेक आते हैं, और वे सब रूसी भाषा जानते हैं। इससे बच्चों को आर्तेक के वातावरण से परिचित होने में और

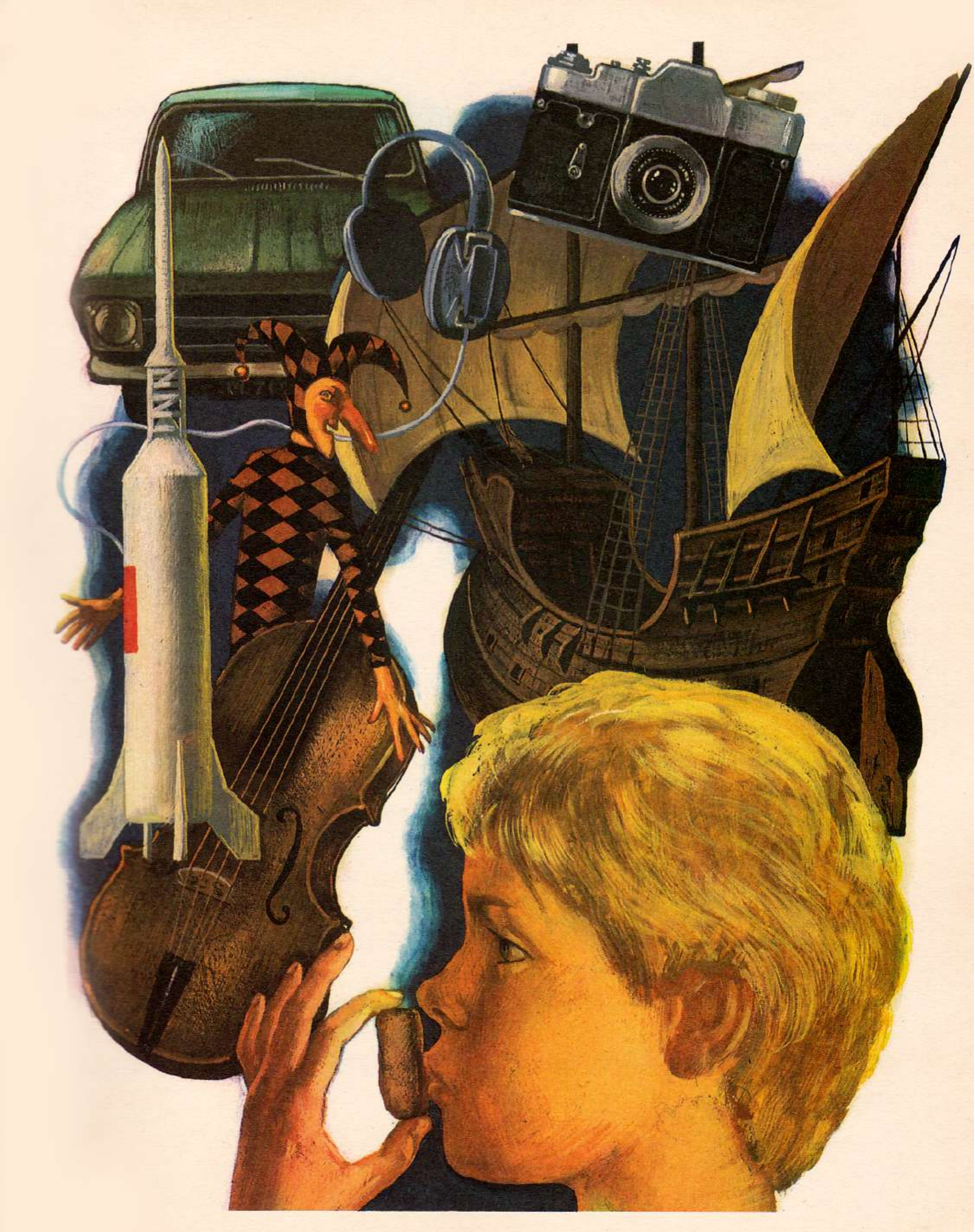

नये दोस्त बनाने में सहायता मिलती है। निस्संदेह बहुत-से बच्चों का जी करता है कि वे अपने जन्म-स्थानों के बारे में बताएं, अपने जातीय खेल और नृत्य दिखाएं तथा अपनी मातृभाषा में गाने गाएं।

"तुम क्या लाई हो?" एस्तोनिया से आई सुनहरे बालों वाली इरमा से उसके दल के साथियों ने पूछा।

"गाय," बच्ची ने जवाब दिया।

"खिलौने वाली क्या?" दल के साथियों ने पूछा।

"जिंदा," इरमा ने उत्तर दिया।

"तो फिर वह कहां है?"

"यहां!" इरमा ने शरारत से भरी मुस्कुराहट के साथ माथे की तरफ़ इशारा करके कहा। मतलब था "मन में"।

और जल्द ही इरमा के दल को मालूम हुआ कि आर्तेक जातीय खेलों की प्रतियोगिता होने वाली है। तब दल की समिति की एक सभा हुई यह निश्चित करना था कि प्रतियोगिता में किसे भेजा जाए।

"मुझे भेज दीजिये," इरमा ने अनुरोध किया, "मैं दल के विश्वास पर पूरी उतरूंगी, पायोनियर का वचन रहा।"

खैर, अगर 'पायोनियर के वचन' का सवाल है तो उसको ही क्यों न भेजा जाए? ऐसे वचन तो व्यर्थ में नहीं देते।

और प्रतियोगिता का दिन भी आ गया।

खेल के मैदान में सबसे पहले रूसी बच्चों ने आकर अपना खेल 'स्वाईका' दिखाया। उन्होंने ज़मीन पर लोहे का एक छल्ला रखा और गोले के जैसे सिरे वाली भाले नुमा चूल को दूर से फेंककर छल्ले के बीच में गाड़ने का प्रयास करते।

उसके बाद आए उक्राइना के बच्चे। उनके हाथों में थीं छड़ियां – 'स्कांदीब्की'। इन छड़ियों को इस तरह फेंकना था कि उनके दोनों सिरे बारी-बारी ज़मीन पर टकराते रहें। और वे देरी तक ऐसे चलती रहे।

मोल्दावियावासियों ने 'लुंग मेगार' नामक अपना खेल दिखाया। इस खेल के नाम का अर्थ 'लंबा गधा' होता है। वे एक दूसरे पर सवार होते जैसे कि दूसरा गधा हो।

उज़्बेक बच्चे एक टांग को पेटी से बांधकर दूसरी पर कूदते रहते। किर्गीज़िया के बच्चे संगीत की धुन पर एक रंगीन रूमाल के इई-गिर्द कूदते-फांदते और जब संगीत रुकता तो रूमाल को झपटकर पकड़ने का प्रयास करते।

"एस्तोनिया!" प्रतियोगिता की जूरी के अध्यक्ष ने घोषणा की और इरमा खेल के मैदान में हाज़िर हो गई।

उसने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई और फिर प्लाइवुड का टुकड़ा और चौक मांगे। दोनों को पाकर उसने प्लाइवुड को सरो के पेड़ से टिकाया और उस पर एक ... गाय बना डाली।

बच्चे हंस पड़े : गाय की तो दुम ही न थी।

"दुम ... दुम तो बनाओ!" वे चिल्लाए।

पर इरमा ने इंकार करते हुए सिर हिलाया।

"दुम तो है!" वह ज़ोर से बोली। "वहां नहीं, पर यहां!" और उसने कपड़े की बनी एक दुम जेब से निकाली। फिर उसने एक काली पट्टी ली और एस्तोनिया के हास्यजनक खेल 'साबा' को खेलने के लिये बच्चों को आमंत्रित किया।

लगभग सब ही उसकी ओर लपके। पर इरमा ने केवल एक को चुना और बाकी सबको पंक्ति में लगा दिया। इसके बाद उसने इस बच्चे की आंखें काली पट्टी से बांधकर उसके हाथों में गाय की दुम थमा दी। दुम के ऊपर लोहे की एक पिन लगी थी। इरमा ने इस बच्चे को तीन बार घुमाया और गाय की दुम उसकी जगह लगने को कहा।

चुना हुआ बच्चा बड़ा साहसी निकला। उसने इरमा के आदेशानुसार सब कुछ किया। वह गाय के पास आया और दुम उस स्थान पर लगाई जहां पर ... सींग होते हैं।

सब हंसी के मारे लोट-पोट हो गए। खिलाड़ी ने पट्टी उतारी और अपनी करतूत को देखा तो खुद भी ज़ोर से हंस पड़ा। तभी उसकी जगह दूसरे ने ले ली। 'साबा' का खेल चलता रहा। और अपने दल में इरमा विजेता बनकर लौटी।

पीड़ी

मैदान में फ़ुटबाल दीवानों की तरह दौड़ती फिर रही थी। और थोड़ी ही दूर, बच्चों की ओर पीठ किए छोटा खिलाड़ी यानिस गाल पकड़कर रो रहा था।

वीत्या प्रोख़ोरोव ने सागर की ओर दौड़ते समय जब फ़िनलैंड के यानिस को देखा तो वह रुक गया।

"तुम्हें क्या हुआ?" उसने पूछा।

यानिस ने जवाब तो दिया पर वीत्या समझ नहीं पाया। पर उसने अनुमान लगाया कि बच्चा विदेशी है अतः रूसी नहीं बोल पाता और अगर रो रहा है तो अवश्य किसी ने उसे दुःख पहुंचाया है।

वीत्या ने उस दुष्ट को ढूंढ़ने के लिये आस-पास नज़र दौड़ाई पर कोई भी नज़र नहीं आया।

वीत्या ने झुककर ज़मीन पर प्रश्न चिन्ह बनाया और अपनी गाल पर घूंसा मारकर पूछा : "किसने?"

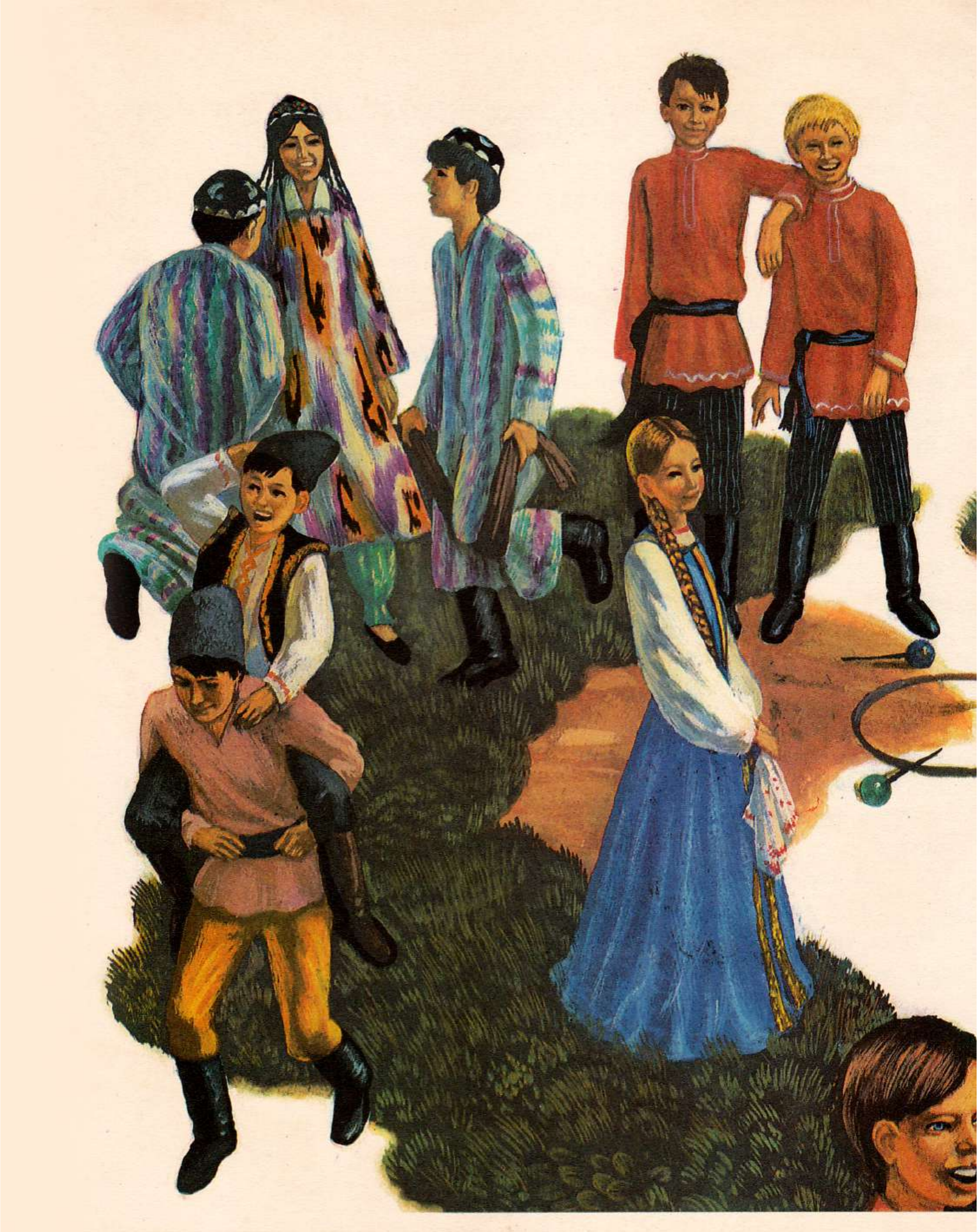

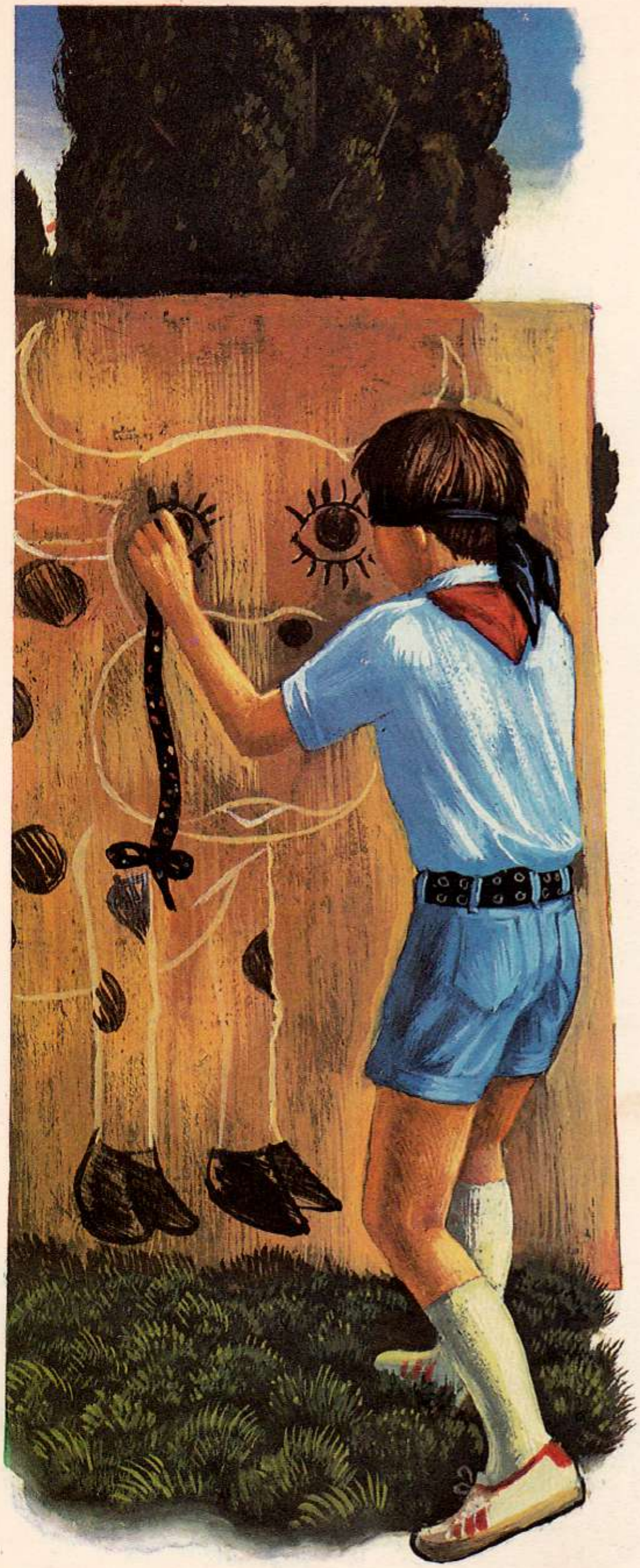

बच्चे ने कराहते हुए मुस्कान भरी और कठिनाई से मुंह हिलाते हुए कहा :

"पीड़ी ..."

रूसी बच्चा सोच में पड़ गया : "पी-ड़ी ?" उसने तो कभी ऐसा शब्द सुना तक नहीं था। चाहे सुना न सुना। पर उस दुष्ट पीड़ी की खैर नहीं। उसे वह आर्तेक में मारपीट का मज़ा ज़रूर चखाएगा : दल की समिति के सामने पेश करेगा!

वीत्या ने रोने वाले बच्चे पर कड़ी नज़र डालकर कहा :

"यह पीड़ी अब कहां है?"

"य-ह-ां!" फ़िनलैंड के बच्चे ने अपनी सूजी गाल की ओर इशारा करके कहा।

वीत्या की हंसी फूटने ही वाली थी पर उसने किसी तरह से रोक ली।

"दांत-दर्द," उसने यानिस को सहानु-भूति प्रकट करते हुए कहा।

"दांत-दर्द," यानिस ने कराहते हुए दोहराया।

रूसी बच्चा गर्म हो उठा।

"अगर दांत-दर्द है तो डाक्टर को दिखाना चाहिए।"

डाक्टर के बारे में सुनकर यानिस कुछ पीछे को हटा। "डर गया है," वीत्या ने यह सोचकर उसे मनाने की जगह अधिक ठोस कदम उठाने का फ़ैसला किया। फ़ुटबाल के खिलाड़ियों को सीटी बजाकर पास बुलाया और कहा :

"यह देखो... इसका दांत दु:ख रहा है... और वह डर के मारे डाक्टर के पास नहीं जाता!"

अब क्या किया जाए? कुछ देर के लिये

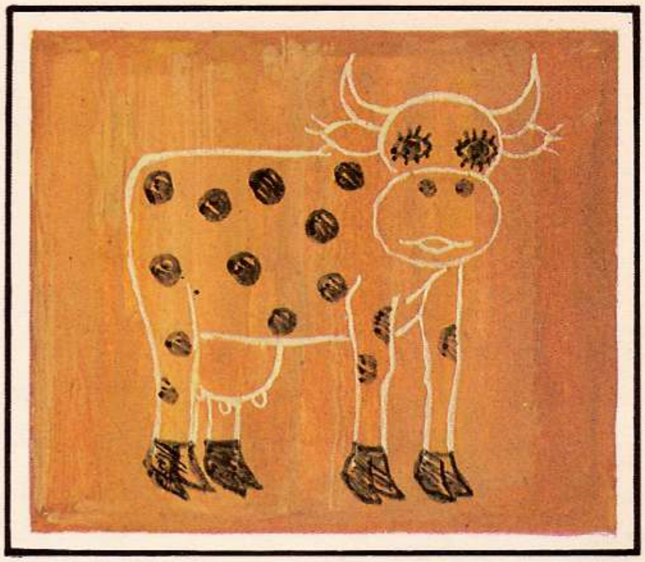

बच्चे सोच में डूब गए और फिर अचानक उनमें से दो ने अपनी गालें पकड़कर रोती हुई आवाज़ में कराहना शुरू कर दिया:

"हाय-हाय दांत में कितना दर्द है! ..."

विदेशी बच्चा इस संयोग को देखकर आश्चर्यचकित हुआ और शंका के साथ इनको तकने लगा। पर बच्चों ने समय व्यर्थ नहीं गंवाया। वे रोगियों को हाथ से पकड़कर फ़ौरन दांतों के डाक्टर की तरफ़ ले गए। और साथ यानिस को भी। उनको कोई भी विरोध न करते हुए देख यानिस ने भी दोस्तों के आगे हथियार डाल दिए।

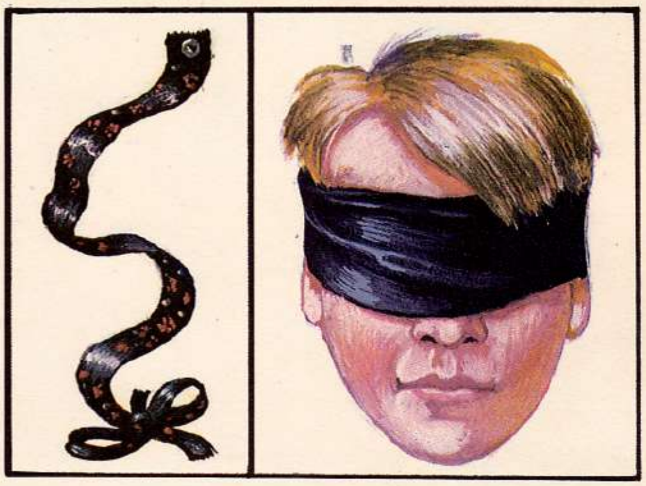

...दांतों की डाक्टरनी भी बड़ी हैरान हुई। उसने सोचा कि फ़ुटबाल के सारे खिलाड़ियों के दांतों में दर्द एक ही समय पर कैसे संभव हो सकता है। पर वीत्या ने तभी उसके कानों में कुछ बुदबुदाकर कहा, और वह फ़िनलैंड के बच्चे की ओर मुस्कुराकर प्यार से बोली:

"मेहमान को आदर और सम्मान सबसे पहले। यह कुर्सी तुम्हारा स्वागत कर रही है..."

यह समझकर कि उसने अपनी ओर से सब कुछ कर दिया, वीत्या सागर में तैरने के लिये दौड़ पड़ा। लौटने पर उसने देखा कि अस्पताल की सीढ़ियों पर यानिस की जैकेट को पकड़े हुए डाक्टरनी खड़ी बेचैनी से इधर-उधर देख रही थी।

"अच्छा, भूल गया," वीत्या ने अनुमान लगाया और जैकेट लेकर फ़िनलैंड के बच्चे को ढूंढ़ने निकल पड़ा। और जल्द ही उसे ढूंढ़ निकाला – वह मैदान में मस्त होकर फ़ुटबाल को दौड़ाने में लगा था। उसे पुकारकर वीत्या ने जैकेट बढ़ा दी। पर यानिस ने उसकी तरफ़ देखा

तक नहीं। न जाने क्यों उसने अपनी पतलून की जेबों को टटोलकर रूसी बच्चे को अपने खाली हाथ दिखा दिए।

"एक भी पैसा ना!" उसने कहा। वीत्या चौंक पड़ा।

"पर तुम्हें पैसों की क्या आवश्यकता है?"

फ़िनलैंड के बच्चे ने मुस्कुराकर अपनी गाल पर हाथ फेरकर दिखाया कि सूजन जा चुकी थी।

"दांत-इलाज – पैसा ना। डाक्टर फ़ीस," उसने जैकेट की तरफ़ इशारा किया और उदास होकर पूछा: "कम?"

बच्चे की तरफ़ देखकर वीत्या सब समझ गया। अभी तक वह सोवियत संघ के तौर-तरीके नहीं जानता। वह नहीं जानता कि यहां इलाज मुफ़्त होता है।

"एक भी पैसा नहीं चाहिए," उसने जैकेट वापस करते हुए कहा, "सोवियत संघ में इलाज मुफ्त होता है।"

यानिस इन बातों पर विचार करते हुए कुछ देर तक खड़ा रहा और फिर अपनी रंगीन जैकेट पहनकर वापस फ़ुटबाल के संघर्ष में कूद पड़ा।

द्वंद्व युद्ध

पहले दल में लड़कियों की भरमार है। लड़कों से डेढ़ गुना अधिक। इसीलिये और एक लड़की के आने के बारे में सुनकर कुछ लड़कियों को खास खुशी न हुई। यह लड़की फ़्रांसीसी थी और उसका नाम था सुज़ान्ना।

नई लड़की ईगोर और कोस्त्या को पसंद आई। मौका मिलते ही सुनहरे बालों वाली विदेशी बच्ची के आगे वे अपने साहस, शक्ति और वीरता की शेखी मारते।

कुछ दिन बीतने पर फ़्रांसीसी बच्ची ने अपनी रूसी सहेलियों से शिकायत कर दी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे: ईगोर और कोस्त्या दोनों ही उससे दोस्ती करना चाहते हैं।

"और तुम उनसे दोस्ती करना नहीं चाहती?..." लड़कियों ने पूछा।

"तुम लोग भी क्या कह रहे हो? मेरा तो बहुत जी करता है," सुज़ान्ना ने कहा।

"तो फिर देर किस बात की, करो," रूसी लड़कियों ने कहा।

"नहीं, भाई," सुज़ान्ना बोली। "वे दोनों एकसाथ दोस्ती करने को तैयार नहीं। हरेक चाहता है कि मैं केवल उसके साथ ही दोस्ती करूं।"

बच्चियां हंस पड़ीं: "तो फिर क्या किया जाए?"

"मैं जानती हूं!" सुज़ान्ना ने चिल्लाकर कहा। "द्वंद्व युद्ध होना चाहिए और क्या!"

रूसी बच्चियां हक्का-बक्का हो उठीं। द्वंद्व युद्ध? यानी कि घूंसेबाज़ी?

"नहीं," उसने कहा, "घूंसेबाज़ी का द्वंद्व युद्ध ठीक नहीं। दूसरा होगा, शतरंज का।"

"शतरंज का?" रूसी बच्चियों ने आश्चर्य से पूछा।

"बिलकुल यही," सुज़ान्ना बोली, "शतरंज का ही। जो भी मुझसे जीतेगा उसके साथ ही दोस्ती करूंगी।"

यह कहते हुए उसके होंठों पर शरारत भरी मुस्कान झलकी।

सहेलियों ने एक दूसरे से नज़रें मिलाकर सुज़ान्ना की तरफ़ सहानुभूति के साथ देखा। ईगोर और कोस्त्या उनके दस्ते में सबसे अच्छे खिलाड़ी थे। यह सुज़ान्ना को जानना ज़रूर चाहिए।

"कोई बात नहीं," सुज़ान्ना ने कहा। "रूसी में तो कुछ ऐसी कहावत है कि 'सुबह शाम से अधिक बुद्धिमान होती है।'"

द्वंद्व युद्ध के बारे में जानकर दोनों लड़के खुश हो उठे। उससे जीतना तो उन दोनों में से हरेक का बायें हाथ का खेल है।

कुरा डाला गया। ईगोर को पहले खेलना था। वह खेलने बैठा ही था कि उसकी मात हो गई।

"हार गया, हार गया!" रेफ़री-बच्चियां चिल्ला पड़ीं।

कोस्त्या की ऐसी ही किस्मत पर वे फिर यही चिल्लाईं।

और फ़ौरन ही सुज़ान्ना ने विजेता की मर्ज़ी कह सुनाई। शतरंज के दोनों खिलाड़ियों की तरफ़ हाथ बढ़ाकर उसने कहा कि दोनों से एकसाथ दोस्ती करेगी। और अगर दूसरे लड़के भी उससे दोस्ती करना चाहें तो वह इनको भी अपने संगत में लेने को तैयार है।

ईगोर और कोस्त्या ने कोई आपत्ति नहीं की, 'द्वंद्व युद्ध' बिल्कुल ईमानदारी से हुआ था और जीत भी साफ़ थी। और विजेता की मर्ज़ी तो नियम के बराबर होती है। पर मन ही मन में हरेक अपनी हार से बहुत दुःखी था। उन बेचारों को क्या मालूम था कि सुज़ान्ना पेरिस के मज़दूर मोहल्लों में शतरंज की उत्तम युवा खिलाड़िन थी।

रूसी बच्ची ओल्या ने यह पत्र शुरू किया।

"इस पत्र को आर्तेक से शांति दिवस पर भेजा गया था। भिन्न-भिन्न देशों के बच्चों ने इसे लिखा है।"

बेलोरूस के आंद्रेई ने यह जोड़ दिया:

"हमारे सबसे प्रिय गीत के बोल हैं:

हां, सदा रहे सूरज,
हां, सदा रहे आसमान,
हां, सदा रहे अम्मा,
हां, सदा रहूं मैं।

उक्राइना से आई ओक्साना ने इस प्रकार लिखा:

"हम संसार भर के बच्चों से मित्रता चाहते हैं।"

अमरीकी एरविन ने भी अपना वाक्य लिखा:

"गुरुजनो! कुछ ऐसा कीजिये कि सारे बच्चों का वर्तमान और भविष्य युद्ध के काले बादलों से रहित तथा प्रकाशवान रहे! कुछ ऐसा कीजिये कि धरती पर युद्ध कभी भी न छिड़े!"

फ़िनलैंड के रेइमो ने फ़िन भाषा में लिखा:

"हम चाहते हैं कि सारे बच्चों के बीच इतनी ही गहरी मित्रता हो जितनी आर्तेक में होती है।"

और फिर उन सबने मिलकर पत्र के अंतिम शब्द सोच लिए: "हमारी इच्छा है कि इस संसार के लोग रोज़ सुबह उठते ही बोला करें: "नमस्कार मेरे दोस्त! शांति की जय!"

उस दिन बहुत सारे पत्र लिखे गऐ। उनको बोतलों में डालकर सीलबंद कर दिया गया।

और सूरज के ढलते ही अलग-अलग रंग की टाइयों वाले बच्चों को लिये एक जहाज़ आर्तेक के बंदरगाह से रवाना हो गया।

पीछे तट के ऊपर मशालें पकड़े हुए एक जलूस चल रहा था। आगे आसमान में तारे टिमटिमा रहे थे। जहाज़ शांत सागर में यात्रा कर रहा था।

तभी आवाज़ आई "तटस्थ क्षेत्र आ गया है!" और शीशे के बने 'लिफ़ाफ़ों' में आर्तेक के पत्र उड़ पड़े। सारे पत्रों पर एक ही पता लिखा था: "विश्व के सभी लोगों के नाम"।

पर्व का झंडा चढ़ाया जा रहा है। पूरे सप्ताह भर वह आर्तेक के ऊपर फहराता रहेगा। और इस पूरे के पूरे सप्ताह में सोवियत संघ के जनतंत्रों और संसार के दूसरे महाद्वीपों के बच्चे नाच, गाने, कविता-पाठ, चित्रकला और कविता रचने की प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहेंगे।

दिन मानो भागे जा रहे हैं। नोवोसिबीर्स्क से आई बच्ची एम्मा और त्बिलीसी से आया लड़का गेओर्गी ऐसे ही एक पर्व वाले रोज़ पर नृत्य के पंडाल पर आ निकले। कैसे नाच रहे थे वे! लगता था कि दोनों के नाच से प्रसन्न होकर मानो सागर भी अन्य बच्चों के साथ तालियां बजा रहा है।

आंसू की बूंदें

आर्तेक को पर्व बहुत पसंद हैं। शांति और एकता का त्योहार आर्तेक में उन दिनों मनाया जाता है जब वहां विदेश से बच्चे आते हैं। सुबह से ही अलाव वाले मैदानों पर अलग-अलग भाषाओं में गाने सुनाई देने लगते हैं, स्मृति-चिन्हों का आदान-प्रदान होने लगता है, युवा नर्तक, संगीतज्ञ, मूर्त्ति-शिल्पी, चित्रकार तथा कवि अपनी-अपनी कला का प्रदर्शन करने लगते हैं। और शाम को मशालों वाला जलूस निकाला जाता है तथा पत्रों से भरी बोतलें सागर में सैर पर निकल जाती हैं।

बेलोरूस से आई पायोनियर नीना बुर्लाकोवा को चित्रकारी बिल्कुल भी नहीं आती थी। अपने स्कूल में तो उसे इस बारे में खास शिकायत नहीं थी: चलो खैर, अगर चित्र बना नहीं सकती तो क्या, गाती तो अच्छा है! पर यहां आर्तेक में नीना बुर्लाकोवा को इस बात पर बहुत गम था कि वह... चॉक से चित्र नहीं बना सकती। हां-हां, चॉक ही, पेंसिल नहीं। अब सुनिये कि चॉक का सवाल क्यों उठा।

आर्तेक आकर नीना को पता चला कि शांति और एकता के त्योहार वाले रोज़ फ़र्श पर चॉक से चित्रकारी की प्रतियोगिता होगी। यद्यपि नीना को चित्रकारी नहीं आती थी फिर भी उसने इस प्रतियोगिता में भाग लेने की ठानी।

... प्रतियोगिता का स्थान था आर्तेक के स्कूल के साथ वाला चौक।

पहले तो नीना देर तक निश्चय करती रही कि चॉक को हाथ में ले या नहीं। घूमते हुए वह बार-बार इर्ष्या और आश्चर्य के साथ देखती कि दूसरे कितनी आसानी से चित्र बना रहे हैं। बिल्कुल जादूगरों की तरह। उनके हाथों में न तो पेंसिल और न ही कूचियां, बस चॉक के टुकड़े ही थे केवल। हां, रंग-बिरंगे ज़रूर थे। पर वाह, कितने शानदार चित्र बना डाले थे उन्होंने फ़र्श पर! पृथ्वी का नीला गोला देशांतर और अक्षांश रेखाओं के बीच... उसके ऊपर सफ़ेद कबूतर... नीले अंतरिक्ष यान... कल-कारखानों की खूबसूरत लाल चिमनियां... भड़कीले, पीले रंग वाले गेहूं

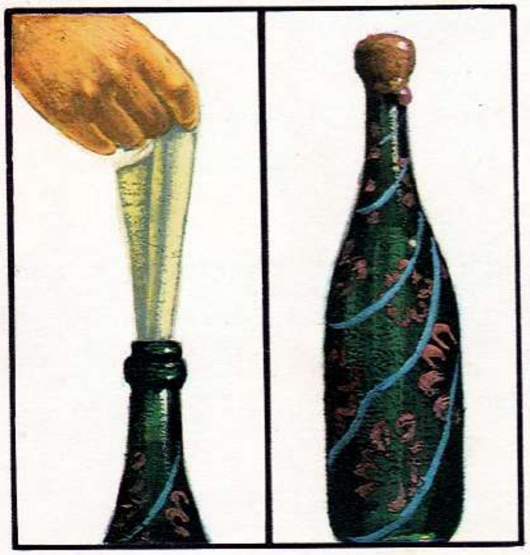

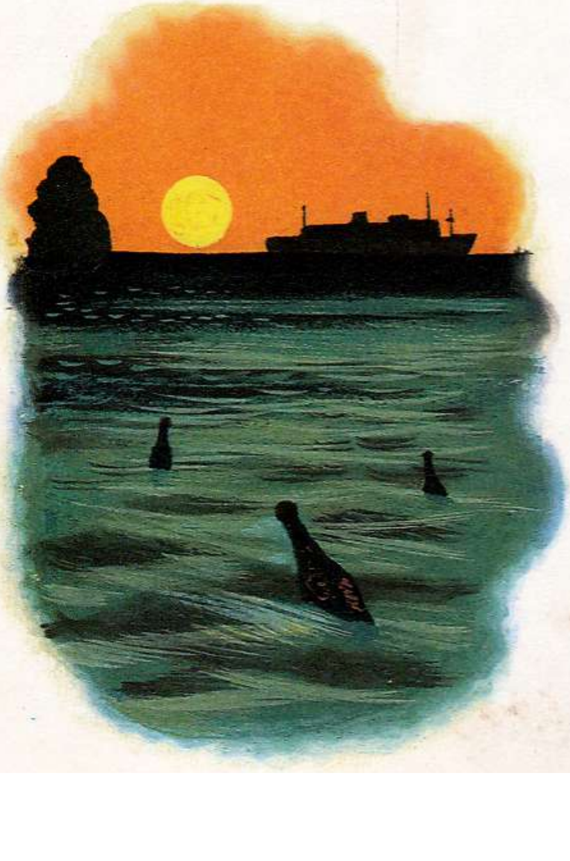

के खेत... और यह समझ में नहीं आ रहा था कि वह, अर्थात नीना, किस रंग की चॉक से चित्र बनाए?

आज सुबह ही एक सभा में चिली से आए मेहमानों ने हिस्सा लिया था। ये चिली के बच्चे थे जो सोवियत बच्चों के पास पायोनियरों का कार्य सीखने आए थे। उन्होंने बताया था कि फ़ासिस्ट सरकार के राज में चिली के मेहनतकशों को कितनी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। नीना को इसके बारे में याद आई और उसने झोले से रंग-बिरंगे चॉक के टुकड़े निकाल लिए। नहीं, नीना द्वारा सोचे हुए चित्र के लिए इनमें से एक भी उपयुक्त न था। वह अपने शिविर गई और अलाव वाले मैदान से कोयले के टुकड़े को लेकर वापस आ गई। बस चित्र बनाने का समय हो चला था। चारों तरफ़ से भिन्न-भिन्न भाषाओं में आवाज़ें आने लगीं: "हम तैयार हैं!"

नीना ने घुटनों के बल बैठकर फ़र्श पर एक बड़ी और भयानक जेल की जाली बना दी: चार काली रेखाएं ऊपर से नीचे और चार दाएं से बाएं। और फिर सफ़ेद चॉक लेकर उसने आंसू की तीन बूंदें जाली के पीछे बना दीं। आंसू की केवल तीन बूंदें बस!

'चिली'– नीना ने अपने चित्र का शीर्षक लिखा और उठकर दोबारा दूसरों के चित्र देखने निकल पड़ी। और जब वह वापस लौटी तो अपने चित्र तक पहुंचना उसके लिए संभव न था। उसे चारों ओर से बच्चों ने पूरी तरह से घेरा हुआ था। बच्चे दुनिया भर के थे: भारतीय, अफ़्रीकी, जापानी, इतालवी, फ़्रांसीसी और चिली के। सारे बच्चों के चेहरे गंभीर और दु:खी थे।

रूसी परीकथा

अपनी मातृभूमि अफ़्रीका में रूस यात्रा की तैयारी करते हुए छोटे-से टॉम ने महान रूसी कवि पुश्किन की लिखी परीकथाएं पढ़ीं। पुश्किन के पूर्वज अफ़्रीकी थे और इस बात पर टॉम को बड़ा गर्व था।

'ज़ार सल्तान की कथा' नामक कहानी टॉम को सबसे अधिक पसंद आई और उसे मन ही मन बहुत गम हुआ कि इस कहानी में बताए गए सारे चमत्कार केवल किताबों में ही होते हैं। ज़ाहिर है कि जब उसे बताया गया कि शीघ्र ही 'नेपचून के पर्व' पर वह अपनी मनपसंद वाली कहानी के कुछेक नायकों से मिल सकेगा तो टॉम को बिल्कुल भी विश्वास न हुआ।

अ० पुश्किन द्वारा लिखे चमत्कारी काव्य 'ज़ार सल्तान की कथा' में बड़ी विचित्र घटनाएं घटती हैं। एक सुंदर हंसनी खूबसूरत राजकुमारी में बदल जाती है, उजड़े हुए द्वीप पर रातों-रात एक शहर बस जाता है, और राजकुमार को प्रसन्न करने के लिए सागर की गहराइयों में से एक बलिष्ठ पहलवान चेरनोमोर तैंतीस बलवानों के दल के साथ हर रोज़ तट पर आता।

तट का वह हिस्सा, जहां पर्व मनाया जा रहा था, फूलों और झंडों से सजा हुआ था। संसार की सारी भाषाओं में गाने चल रहे थे।

और तभी नावों और मोटर बोटों का बेड़ा सागर में दीखने लगा... वह तट के पास आकर भड़कीले रंगों वाले कपड़े पहने समुद्री डाकुओं और जल-परियों को उतारने लगा। जल-नारियां नाचने लगीं, समुद्री डाकू भी कदम मिलाने लगे, संगीत ज़ोर पकड़े हुए है—और अचानक सन्नाटा छा गया, बस केवल सागर की कल-कल ही एक मात्र आवाज़ हो रही थी। जल-नारियां और समुद्री डाकू निस्तब्ध हो गए। वे एकटक सागर की ओर देखते रह गए। टॉम भी निस्तब्ध था।

यह सब इतना अनहोना घट रहा था कि टॉम की तो सांस ही रुकने लगी। उसकी आंखों के सामने ही सागर ने धीरे से पीछे हटकर बलवानों को और स्वयं बलिष्ठ चेरनोमोर को रास्ता दे दिया!

टॉम ने सारे बलवानों को गिन डाला: पूरे के पूरे तैंतीस! अब तो ज़रा भी शंका बची न थी कि वे पुश्किन की कहानी के नायक हैं! उन्होंने शिरस्त्राण और कवच पहन रखे थे और उनके हाथों में बरछे थे! सागर के इन निवासियों की पीठ पर बंधे हवा के सिलिंडरों (सांस लेने के लिए) पर उसने ध्यान ही नहीं दिया।

बलवान तट पर एक पंक्ति में खड़े हो गए और उन्होंने अपना मुंह सागर की ओर कर लिया। वे अपने बरछों को उठाकर और उन्हें घुमाकर देवता नेपचून का अभिनंदन करने लगे। यह देवता

डरावना-सा दीखते हुए भी बहुत दयालु है। जो कुछ भी हो मन में उससे डर नहीं लगता है। पायोनियरों द्वारा हंसी मज़ाक के लिए दी गई शिकायतों की सूची को नेपचून ध्यान से पढ़ता है। और सारे दोषियों को दंड के रूप में वह अपने काले सागर के राज्य में फेंक देने का आदेश देता है। नेपचून के सेवकों की सहायता से दल लीडर पानी में दिखाई देने लगते हैं।

"और कोई शिकायत है क्या?" नेपचून ने कड़ककर पूछा।

"हां, है!" टॉम ने सागर के तट के समीप आकर कहा।

"किससे शिकायत है?"

टॉम ने अपनी टूटी-फूटी रूसी में बताया कि उसे अपने आपसे शिकायत है: इस बात पर कि उसे नेपचून और तैंतीस बलवानों का विश्वास नहीं था।

नेपचून ने तुरंत अपने सेवकों को हुक्म दिया कि परीकथा पर विश्वास न करने की बीमारी से वे टॉम को छुटकारा दिलवाएं। सेवकों ने खुशी से किलकारी भरते हुए टॉम को सागर में डुबकी लगवाई और फिर उस छोटे-से अफ़्रीकी को तट पर ले आए।

टॉम के भूरे चेहरे पर सफ़ेद बत्तीसी मुस्कान-सी चमकने लगी। "आर्तेक की इस क्राइमियाई धरती पर," वह सोचने लगा, "सारी कथाएं सच हो जाती हैं।"

सूखी हुई जैली फ़िश

आर्तेक जाने वाले पायोनियर से उसके स्कूल के बच्चे अक्सर कुछ न कुछ लाने को कहते हैं। कोई कहता है कि उसके लिए अजीबोगरीब जड़ी-बूटियों को लाया जाए, कोई सिपियां लाने को कहता है तो कोई खनिज पदार्थों की कामना करता है।

एक आर्तेकवासी के अनेक पेशे होते हैं: रेडियो-चालक, पर्यटन-विशेषज्ञ, स्वास्थ्य-निरीक्षक, रेफ़री और टेबल टेनिस का प्रशिक्षक। और इसके साथ ही हाल ही में बताए हुए कारण से एक पेशा और जुड़ जाता है: संग्रहकर्त्ता का।

मीत्या आर्खीपोव गोल-मटोल चेहरे वाला प्रसन्नचित्त बच्चा है। उसने कोई बहुत ही विचित्र वस्तु लाने का वादा किया है। वादा तो कर दिया पर इस 'विचित्र वस्तु' के बारे में तय नहीं किया। ऐसा क्यों? इसलिये कि उसे स्वयं ही मालूम नही था कि अपने स्कूल के लिए वह क्या विचित्र वस्तु ला पाएगा।

एक दिन मीत्या सागर के अंदर तक बने पोतघाट पर पहुंचा और पानी को देखने लगा। सागर का पानी बिल्कुल पारदर्शक था। उसके अंदर ठीक मछलीघर के समान मछलियां शांति से खेल रही थीं। सूर्य की किरणों से मोती के रंग वाली सिपियां मानो जल-बुझ रही थीं और जैली फ़िश तैर रही थीं। बस इन जैली फ़िशों से मीत्या के मन में एक विचार उठा।

वह वापस तट पर दौड़कर पहुंचा। झटपट एक बालटी व बच्चों द्वारा स्कूल के लिए तितलियां

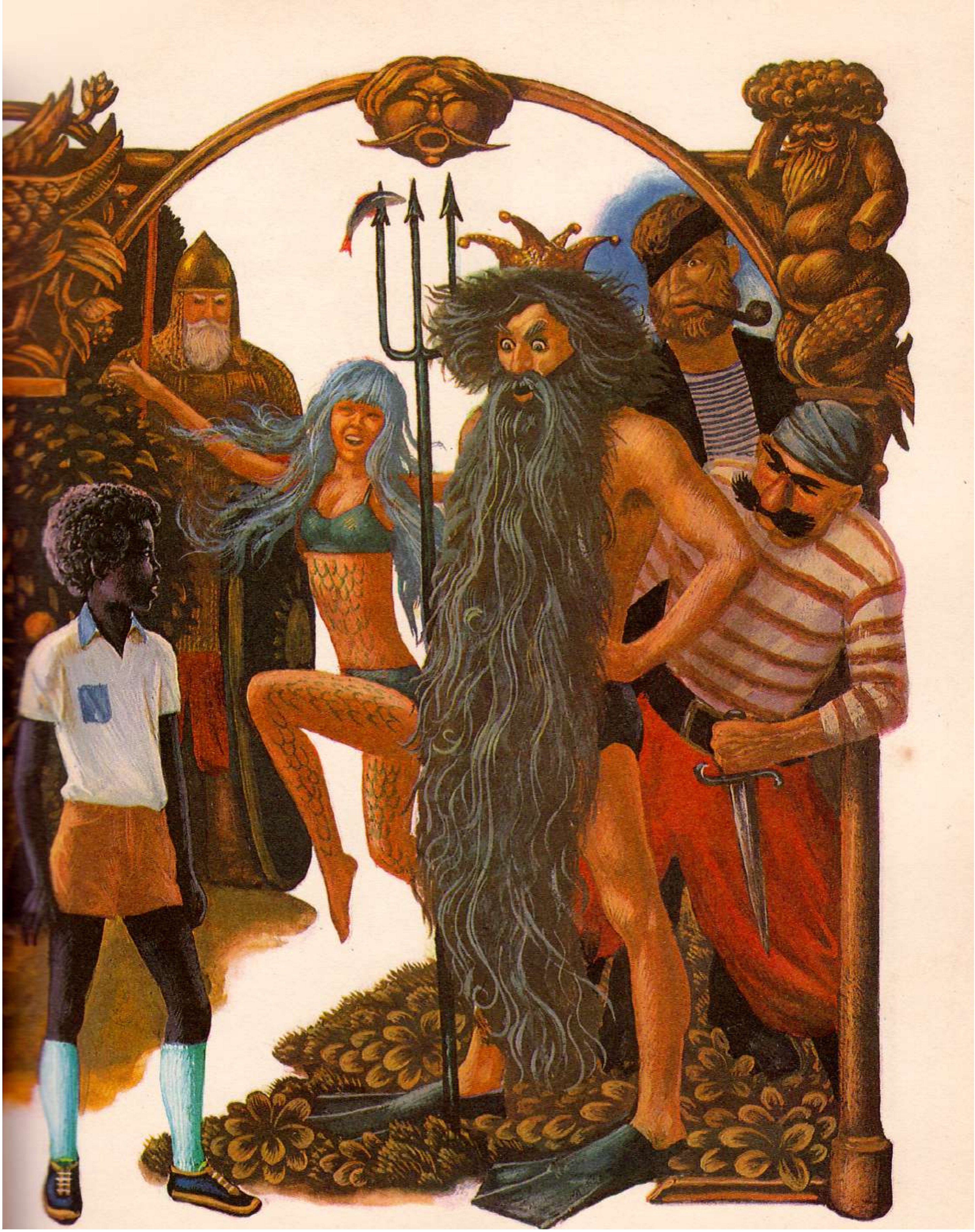

ОТ ЧИЛИ
ПРОЧЬ
PEACE
VENCERE
MOS

आर्तेक में उत्सव और खेल इत्यादि हमेशा मजेदार, रंग-बिरंगे और लोगों से भरपूर होते हैं।

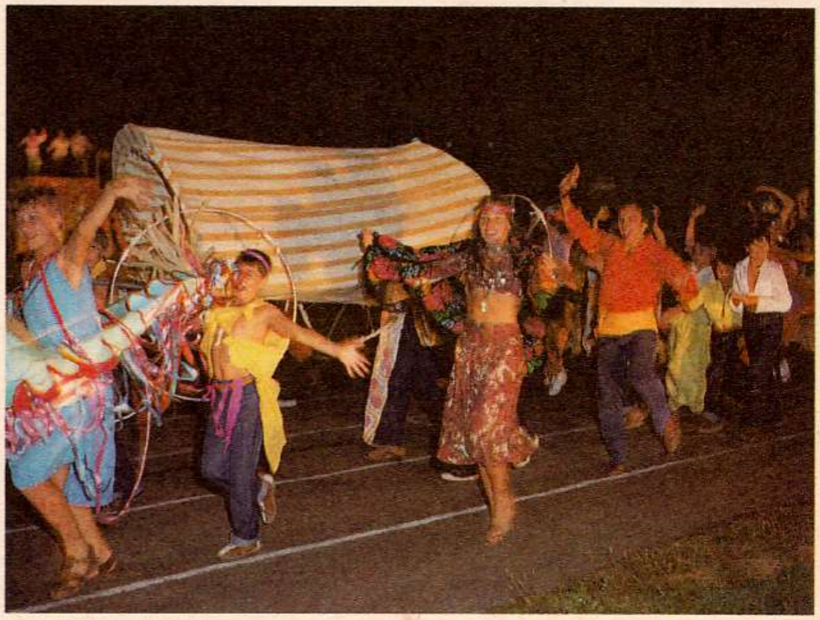

पकड़ने वाले जाल का प्रबंध किया और जैली फ़िश पकड़ने में व्यस्त हो गया ...

इसके बाद वह तट पर लौट आया और उसने जैली फ़िशों को अलग-अलग अखबारों पर फैलाकर सुखाने के लिए एक एकांत स्थान में रख दिया। जैली फ़िशों को सूर्य की तेज़ किरणों में झुलसने से बचाने के लिए उसने चीड़ की टहनियों से ढक दिया।

मीत्या का मन खुशी से नाच रहा था। यह तो स्वाभाविक ही था, आखिर वह सूखी हुई जैली फ़िश घर लाएगा! और यहां तक कि जब दूसरे आर्तेकवासियों को यह मालूम होगा तो वे इर्ष्या से फुक जाएंगे। "तुम अपने स्कूल क्या ले जा रहे हो?" जाने से पहले सब उससे पूछेंगे। और वह कहेगा: "सूखी हुई जैली फ़िश"। और अगले रोज़ मीत्या ने शेखी मारनी शुरू कर दी कि वह कुछ बहुत ही विचित्र वस्तु घर ले जाएगा।

"क्या, कौन-सी बहुत विचित्र वस्तु?" मीत्या पर सारे बच्चे टूट पड़े।

मीत्या ने बच्चों को कष्ट न देना चाहा और वह उन्हें सागर के तट पर ले गया। सामने दो पत्थरों से दबी चीड़ की टहनी पड़ी थी।

"अब देखो!" मीत्या ने खुशी से चिल्लाकर ज़मीन से कंटीली टहनी उठाई। "सूखी हुई जैली फ़िश!"

पर जैली फ़िश कहां? उनकी जगह पर चार काले धब्बे थे – ठीक उतने ही जितने सागरवासियों को मीत्या ने पकड़ा था।

भला बेचारा मीत्या कहां से जानता कि जैली फ़िश सुखाई नहीं जा सकती हैं, वे तो बस मानो भाप की तरह से उड़ जाती हैं।

नौसिखिया

खेल बचपन का एक विशेषाधिकार है। आर्तेक के स्वामी हैं बच्चे। इसलिये दुनिया में जितने भी खेल-कूद के रूप हैं – उन सबको आर्तेकवासी जानते हैं। आखिर आर्तेक में दुनिया भर से मेहमान जो आते हैं। और जानते हैं कि इन मेहमानों का 'सामान' कैसा होता है – खेल और गीत। मेहमान तो चले जाते हैं पर खेल और गीत रह जाते हैं।

आर्तेक में खेल-कूद बहुत ही पसंद किया जाता है और इसीलिये कभी-कभी आर्तेक को 'खेल-कूदिस्तान' भी कहा जाता है।

पर आर्तेक खेलों का केवल संग्रह ही नहीं करता है, वहां नए-नए खेलों को बनाया भी जाता है। एक खेल से तो संसार के सारे बच्चे परिचित हैं। इसका नाम है – 'स्नाइपर'।

... मैदान पर सरो की छांव में एक कड़ा मुकाबला चल रहा था। कुछ दूर एक व्यक्ति कंधे पर तौलिया डाले खड़ा था। वह खेल की ओर एकटक देख रहा था और उसकी गहराई में पहुंचने का प्रयास कर रहा था। वह शायद तैरने जा रहा था पर रास्ते में ठहर गया।

दो टीमें एक दूसरे से लोहा ले रही थीं। हरेक में दस खिलाड़ी और एक-एक कप्तान थे। हर टीम का अपना पाला था। कप्तानों की अपनी-अपनी रेखाएं खिलाड़ियों के पीछे की ओर थीं। खेल का लक्ष्य था खिलाड़ी को 'आऊट' करना – अर्थात विरोधी को गेंद से मारकर उसे कप्तान वाली रेखा के पार पहुंचने पर मजबूर करना। और यदि 'आऊट' किया गया खिलाड़ी दूसरी ओर वाले खिलाड़ी को आऊट करने में सफल हो जाता तो वह फ़ौरन अपने स्थान पर पहुंच जाता।

तभी वह व्यक्ति खेल के मैदान के समीप पहुंचा। उसने अपना तौलिया पेड़ की एक टहनी पर लटकाया और इशारे से खेल में शामिल करने को पूछा। यों तो यह सारे नियमों के विरुद्ध था पर आर्तेक में बड़ों का सम्मान किया जाता है। यह सोचकर कि वह मेहमान है उसे जल्दी से ले लिया गया। यहां तक कि इस नौसिखिया की ओर ध्यान से देखा भी नहीं।

नौसिखिया आगंतुक ने फ़ौरन ही एक के बाद एक तीन खिलाड़ियों को 'आऊट' कर दिया और वे, जिनकी ओर से वह खेल रहा था, खुशी से नाच उठे। विरोधी दल वालों के गम की सीमा न रही...

और वे ही हारे।

आगंतुक ने टहनी से तौलिया उतारकर खेल का नाम पूछा।

"'स्नाइपर,'" बच्चों ने उत्तर दिया।

"नाम भी बिल्कुल सही है," आगंतुक ने कहा और मुसकराते हुए चला गया।

तभी हारे हुए दल के पास दल लीडर आया।

"हार गए?

"हां, हार गए," बच्चों ने गुस्से से कहा।

"तो इसमें दुःख करने की क्या बात है?" लीडर ने आश्चर्य से पूछा।

बच्चों को लीडर का आश्चर्य चकित होना बड़ा अजीब लगा: उसने भी कैसा समय ढूंढ़ा है मज़ाक करने का!

"और इसमें खुशी मनाने की कौन-सी बात है?"

"क्या मतलब कि खुशी की क्या बात?" लीडर ने उत्तेजना के साथ कहा। "अंतरिक्ष यात्री यूरी गागारिन से ही तो हारे हो! ..."

"यूरी गागारिन से?" बच्चों के चेहरों पर विस्मय और खुशी की सीमा न थी। फिर क्या था? सारे के सारे अंतरिक्ष यात्री को ढूंढ़ने दौड़े। पर उसके पदचिन्ह तो सूख चुके थे ... खैर बाद में मुलाकात भी हो ही गई – यों भी और 'स्नाइपर' के खेल में भी।

इस घटना के बाद बहुत साल बीत चुके हैं पर आज भी खेलकूदिस्तान से नौसिखियों का परिचय कराते हुए आर्तेक उन्हें 'स्नाइपर' का खेल खेलने की सलाह देता है क्योंकि यह खेल संसार के पहले अंतरिक्ष यात्री को बड़ा पसंद था।

मित्रतापूर्ण मौसम

"यह आर्तेक है!" इन शब्दों से ही आर्तेक का रेडियो स्टेशन अपनी सभा आरंभ करता है। उसका सिगनल 'ऊ-5' है जिसे सोवियत संघ और दूसरे देशों के रेडियो प्रेमी अच्छी तरह से जानते हैं।

एक रोज़ किसी रेडियो प्रेमी ने आर्तेक के सिगनल को सुनकर आर्तेक के रेडियो स्टेशन के आपरेटर से पूछा कि वह क्राइमिया में कहां से आया?

"अंतरिक्ष से," आपरेटर ने जवाब दिया।

रेडियो प्रेमी को लगा कि उसके साथ मज़ाक की जा रही है।

"कौन साहब बोल रहे हैं?" उसने पूछा।

"'देवदार' नामक मिशन वाला अंतरिक्ष यात्री," आर्तेक के रेडियो स्टेशन के आपरेटर ने उत्तर दिया और अगले वाक्य को सुनने का इंतज़ार करने लगा।

पर रेडियो प्रेमी ने और कुछ न कहा – वह समझ चुका था कि उसके साथ मज़ाक किया जा रहा है। कम से कम उसे तो यह अच्छी तरह मालूम था कि 'देवदार' तो गागारिन के मिशन का नाम है।

पर फिर भी उसने इस सवाल को लिखकर पूछ ही लिया। जब उसे उत्तर में मालूम चला कि वह पहले अंतरिक्ष यात्री से बात कर रहा था तो वह हक्का-बक्का रह गया।

आर्तेक का रेडियो स्टेशन एक बंद संस्था के समान नहीं। जिसको भी प्रसारण में दिलचस्पी हो वहां जा सकता है। प्रसारण व सिगनलों को प्राप्त करने के यंत्र, मोर्स-कोड और रेडियो-तकनीक इत्यादि के बारे में यहां सीखा जा सकता है। यहां अक्सर लोग आते हैं, सीखते हैं और जब आवश्यकता पड़ती है प्रसारण भी करते हैं।

"यह आर्तेक है! कैसा सुनाई दे रहा है? ..."

"ठीक सुनाई दे रहा है! ... ठीक! ..." और इस तरह की आवाजें एक दूसरे को टोकती हुई आर्तेक के ऊपर आती रहती हैं। अक्सर ये पायोनियर रेडियो स्टेशन यही सवाल पूछते हैं: "कैसा मौसम है तुम्हारी तरफ़?"

"अच्छा!" आर्तेक के आपरेटर अक्सर यही उत्तर देते हैं।

पर एक बार बहुत ही विचित्र उत्तर मिला:

"मित्रतापूर्ण!" अचानक आपरेटर बोल पड़ा।

हालांकि आपरेटर ने सही शब्द का प्रयोग नहीं किया था पर अर्थ तो एकदम सही था – आर्तेक में मौसम सदा ही मित्रतापूर्ण रहता है।

सुखद दृश्य

आर्तेक की सारी घटनाओं के संबंध में अखबारों-पत्रिकाओं में लिखा जाता है, रेडियो पर प्रसारित होता है, और टेलीविजन तथा फ़िल्मों में दिखाया जाता है। स्वयं आर्तेक भी अपनी स्मृति के भंडार में यह सब सुरक्षित रखता है। सच कहा जाए तो अपनी फ़िल्मी स्मृति में रखता है।

आर्तेक में 'आर्तेकफ़िल्म' नामक सिने स्टूडियो है। अन्य स्टूडियो की तरह ही यहां भी अपने सिनेरियो-लेखक, निर्देशक, आपरेटर इत्यादि हैं। बस फ़र्क केवल इतना ही है कि 'आर्तेकफ़िल्म' में वे सब बच्चे हैं। बच्चे ही सिनेरियो लिखते हैं, फ़िल्मों के निर्देशक बनते हैं और फ़िल्म खींचते हैं।

धातु के बने डिब्बों में सारे अखिल सोवियत और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों व रैलियों, पर्वों, आर्तेक के प्रसिद्ध मेहमानों से मुलाकातों, खेल-कूद व अन्य प्रतियोगिताओं की फ़िल्में रखी रहती हैं।

... पहले अंतरिक्ष यात्री गागारिन के जीवन काल की बात है। आर्तेक में पायोनियरों का तीसरा अखिल सोवियत सम्मेलन चल रहा था। बड़े-बड़े मेहमानों की प्रतीक्षा हो रही थी और इनमें से एक थे यूरी अलेक्सेयेविच गागारिन।

पायोनियरों का सम्मेलन – यह एक बड़ी सभा होती है। सोवियत संघ के सारे हिस्सों के पायोनियर इसमें आते हैं। इस जलसे में पायोनियर अपना सफलताओं और उपलब्धियों की रिपोर्टें पेश करते हैं तथा भविष्य की योजनाओं पर भी विचार-विमर्श करते हैं। इसके साथ ही साथ पायोनियरों का सम्मेलन एक पर्व भी है। इसकी समाप्ति एक कंसर्ट से होती है। इसको बच्चे ही तैयार करते हैं।

अंतरिक्ष यात्री ने बच्चों की आशाओं पर पानी नहीं फेरा और पर्व के ऐन मौके पर आर्तेक के स्टेडियम में हाज़िर हो गए। सबके सब अपनी-अपनी कुर्सियों से खड़े हो गए और एक आवाज़ होकर मेहमान का अभिवादन करने लगे:

"गा-गा-रिन! गा-गा-रिन!!!"

गागारिन ने अपने हाथ उठाकर बच्चों का अभिनंदन किया और फिर कुर्सी पर बैठ गए। फ़ौरन ही उनकी ओर सिनेमा आपरेटर और सम्वाददाता बड़े और छोटे – आने लगे।

यूरी गागारिन ने बच्चों के साथ खूब हंसी मज़ाक की और आटोग्राफ़ दिए। तभी उनकी नज़र एक छोटे-से सिनेमा आपरेटर पर पड़ी। वह किसी भी प्रकार उनके समीप न आ पा रहा था।

"छोटे मित्र, मेरे पास आओ!" यूरी गागारिन चिल्लाए। "इस बच्चे को रास्ता दीजिये..."

उन्होंने बच्चे की ओर हाथ बढ़ाकर उसे पास आने का संकेत किया। वह बेचारा इतना आश्चर्यचकित हो गया कि उसने कैमरा हटा लिया पर गागारिन भी मुस्कुराते और बुलाते रहे। नन्हे आपरेटर ने आखिर अपने पर काबू पा ही लिया और कैमरा उठाकर गागारिन की फ़िल्म खींचने लगा।

उसने गागारिन को वैसी ही मुद्रा में खींचा – हंसमुख और बुलाते हुए। और अब जब भी आर्तेक के सिनेमा हॉल में बच्चे इस दृश्य को देखते हैं तो उन्हें लगता है कि यूरी गागारिन उन्हीं की ओर देखकर मुस्कुरा रहे हैं।

12 अप्रैल सन् 1961 को यूरी गागारिन ने संसार में पहली बार तारों की ओर उड़ान भरी थी। अब गागारिन का यान एक ऐतिहासिक प्रदर्शित वस्तु के रूप में मास्को में सोवियत अर्थ-व्यवस्था की उपलब्धियों की प्रदर्शनी के अंतरिक्ष के मंडप में रखा है।

अंतरिक्ष का कण

आर्तेक के प्रसिद्ध मित्रों में सबसे प्यारे हैं – यूरी गागारिन। शायद इसलिये कि सर्वप्रथम अंतरिक्ष यात्री के साथ मुलाकातें बच्चों को आज भी याद हैं। इसके साथ ही गागारिन ने शिविर में 'अंतरिक्ष की प्रदर्शनी' की नींव रखी थी।

इस प्रदर्शनी को देखने के ढेर सारे इच्छुक हैं – सारा का सारा आर्तेक। और कुछेक बच्चे और बच्चियां तो यहां हर रोज़ ही आने का प्रयत्न करते हैं। बात यह है कि 'अंतरिक्ष की प्रदर्शनी' का साथ ही साथ अंतरिक्ष की पाठशाला की तरह प्रयोग भी होता है। और इसीलिये जब दल लीडर इन नन्हे 'अंतरिक्ष यात्रियों' से पूछते हैं कि वे कहां और किसलिये जा रहे हैं तो बच्चे बिना बढ़ा-चढ़ाकर जवाब देते हैं :

"अंतरिक्ष में ... काम करने ..."

और वास्तव में अंतरिक्ष की पाठशाला में काम तो करना ही पड़ता है। ज़रा सोचो तो कि कुर्सी में बैठकर पैंतालीस डिग्री का कोण बनाते हुए घूमो, और उसके बाद बिल्ली की तरह पैरों पर छलांग लगाओ, ऊपर से एक समान अक्षर बनाते हुए हस्ताक्षर करो या फिर कोई ज्यामितीय आकृति बनाओ। अथवा यंत्रों पर दिखाओ कि तुम्हारी क्रियात्मक स्मृति स्थायी है या नहीं, क्या तुम तेज़ी के साथ एक वस्तु से दूसरी की ओर अपना ध्यान केंद्रित कर सकते हो?

घूमने वाला हिंडोला एक आदमी के लिये बना होता है। दीखने में बिल्कुल खिलौने-सा लगता है। पर जैसे ही घूमने लगता है – दांत तले जीभ दब जाती है। सात-आठ मिनट में इस उपकेंद्री हिंडोले में सवार व्यक्ति का भार सात-आठ गुना बढ़ जाता है। सच तो यह है कि उपकेंद्री हिंडोला

बच्चों का खिलौना नहीं! उनको इस पर प्रशिक्षण नहीं दिया जाता है, वे छोटे जो होते हैं। प्रदर्शनी में वह प्रशिक्षण के लिये नहीं केवल अध्ययन के लिये रखा है।

इस प्रदर्शनी में प्रदर्शित वस्तुओं में से बहुत सारी वास्तविक भी हैं – ऐसी, जिन्हें दूसरी प्रदर्शनियों में नहीं देखा जा सकता : सोवियत अंतरिक्ष यान 'वोस्तोक' की कुर्सी ... वह पैराशूट, जिसकी मदद से पहला अंतरिक्ष यात्री धरती पर उतरा था ... प्रशिक्षण के लिये उसके द्वारा पहनी गई पोशाक ... अंतरिक्ष में भेजे गए पहले सोवियत राकेटों में से एक, 'लूनोखोद-1' का मॉडल, जो चंद्रमा की मिट्टी को धरती पर लाया था ... अंतरिक्ष यात्रियों की तसवीरें, धरती और अंतरिक्ष में लिए गए उनके छाया चित्र ... और लीजिये सबसे रहस्यपूर्ण – स्वयं अंतरिक्ष! प्रदर्शनी के एक हॉल में सूर्योदय के समान धीरे-धीरे प्रकाश तेज़ होता है और आश्चर्यचकित दर्शकों के समक्ष अथाह गहराई वाला अंतरिक्ष खुलने लगता है – तथा उसके बीच खुले अंतरिक्ष में तैरता हुआ जीवित व्यक्ति ... यह सुप्रसिद्ध सोवियत अंतरिक्ष यात्री अलेक्सेई लेओनोव हैं – खुले अंतरिक्ष में निकलने वाला पहला पृथ्वीवासी।

अशोत सागातेल्यान आर्मीनिया से आया है। लगता है कि अगर यह अनुमति होती तो वह दिन और रात इसी प्रदर्शनी में ही रहता। अशोत के अंतरिक्ष यात्री बनने के सपनों के बारे में पूरा दल जानता है। एक मित्र के सिवा सभी उससे सहमत हैं। अशोत की इस इच्छा के बारे में उसे कुछ शंका है।

तभी वे भवन के एक शीतल हॉल से गर्मागर्म धूप में बाहर निकलकर कल्पना करने लगे। उन दोनों ने अपने आपको अंतरिक्ष यानों के कप्तानों का रूप दे डाला। अशोत अपने यान में बैठा कहीं दूर सप्तऋषी नक्षत्र में पहुंच चुका था कि अचानक उसके मित्र की उदास आवाज़ ने उसे धरती पर उतार दिया।

"यह कोरी कल्पना ही है तुम्हारी!" उसने गहरी सांस लेकर अशोत की ओर आलोचनात्मक नज़र से देखते हुए कहा।

"कोरी क्यों?" अशोत ने गुस्से से पूछा।

"क्योंकि अल्पदृष्टि वालों को अंतरिक्ष यात्री नहीं बनाया जा सकता है!" निकीता ने जवाब दिया।

अशोत ने यों ही अपने चश्मे को पकड़ लिया। पर वह हार मानने को तैयार नहीं था।

"मैं खूब पढ़ाई करूंगा और जब अध्ययन पूरा कर लूंगा तो ऐसी दवा की खोज करूंगा," उसने कहा।

"कौन-सी दवा?" निकीता के चेहरे पर प्रश्न चिन्ह और जिज्ञासा झलक रहे थे।

"अल्पदृष्टि की!" अशोत ने उत्साह के साथ जवाब दिया।

आर्तेक की धूप में उसे सब कुछ सुलभ व संभव प्रतीत हो रहा था।

आर्तेक के पायोनियरों के बीच यूरी गागारिन।
अंतरिक्ष की प्रदर्शनी में।

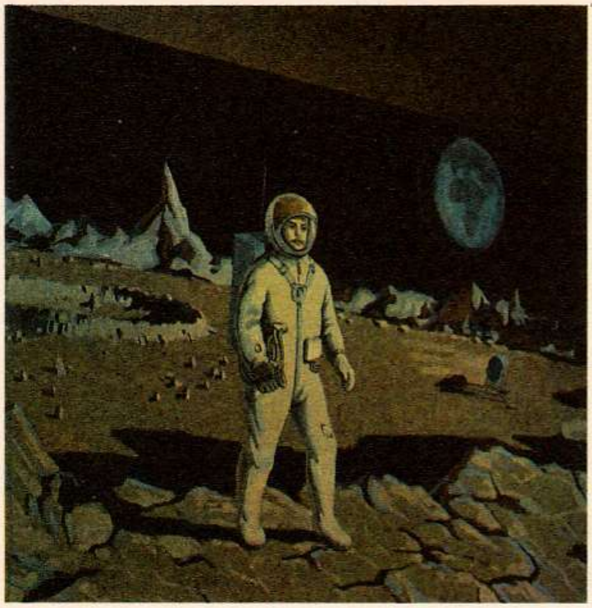

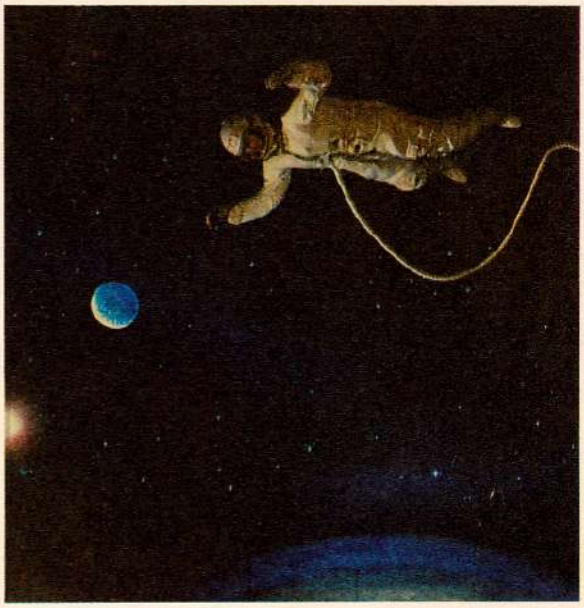

सन् 2000 में आर्तेक

आर्तेक की सबसे छोटी इकाई होती है पायोनियर शाखा, उसके बाद मंझली होता है दल और सबसे बड़ा – दस्ता। पर इन सबमें मुख्य है दल। दल के साथ ही बच्चे टूर पर निकलते हैं, दल में ही खेल-कूद करते हैं, कंसर्टों और पायोनियरों के हुनर इत्यादि की प्रतियोगिताओं का आयोजन करते हैं।

दल के जीवन की मुख्य घटना सभा होती है। सभाएं साधारण तथा विशेष होती हैं। साधारण सभाओं के लिये बच्चे पहले से ही तैयारी करते हैं पर विशेष सभाओं के लिये तैयारी का समय ही नहीं मिलता। बिगुल के बजने पर दल पंक्ति में खड़ा हो जाता है और सभा के स्थान की ओर चल पड़ता है। चलते समय सब

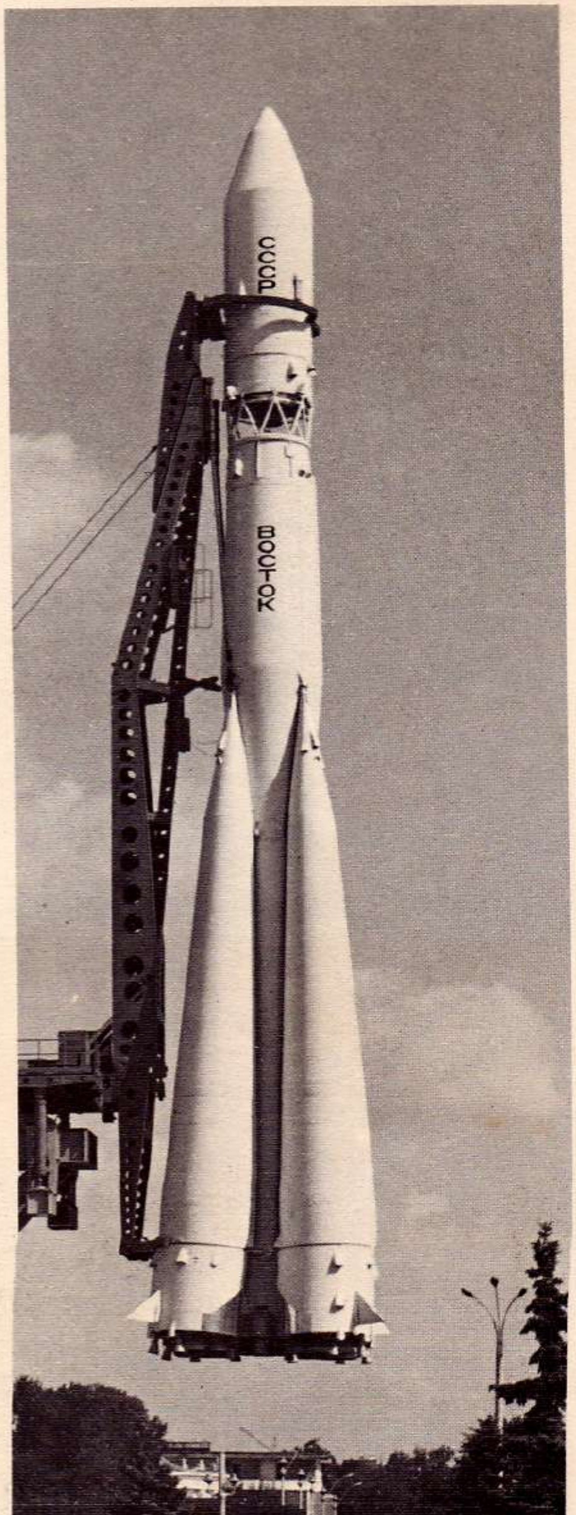

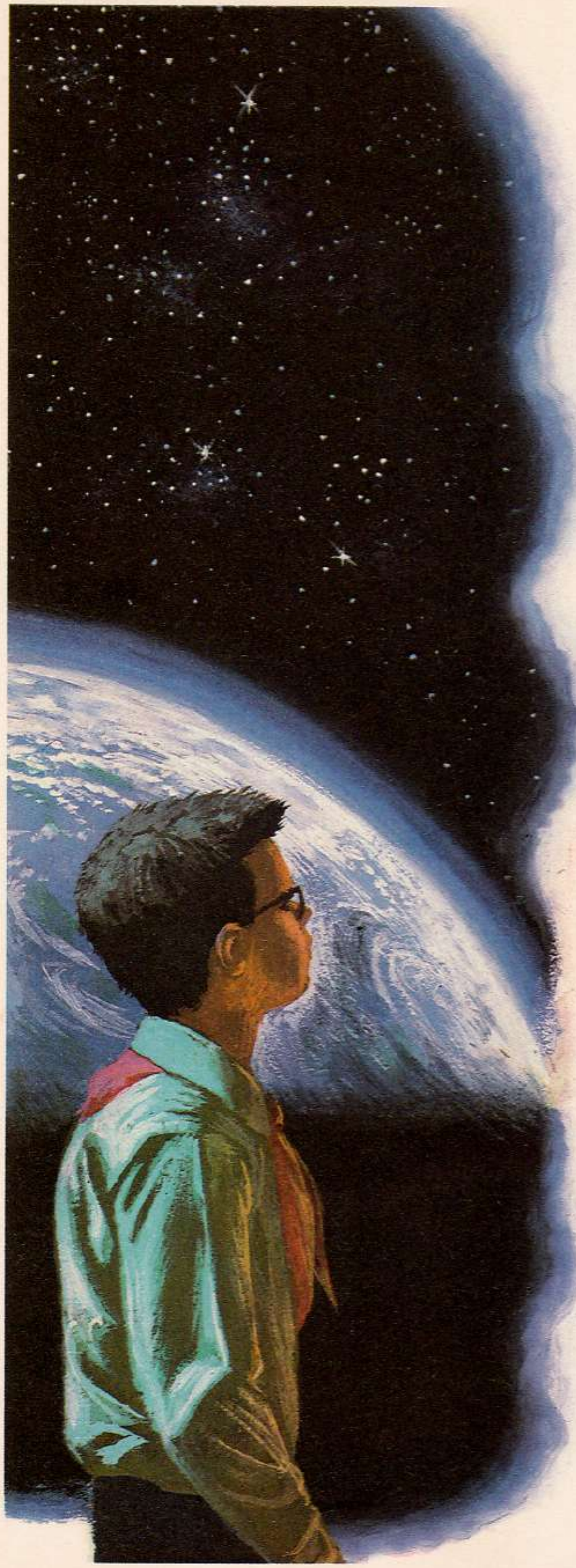

सोचते रहते हैं : उन्हें कहां और किसलिये ले जाया जा रहा है? अंतरिक्ष यात्रियों से मिलने के लिये तो नहीं? या हो सकता है कि रात के तूफ़ान द्वारा तट पर ला फेंकी डॉलफिनों को बचाने के लिये? जो भी हो वे तो दोनों के लिये ही तैयार हैं। ऐसा तो हो भी चुका है : आर्तेक ने अंगूर के बागों को हानिकारक कीड़ों से बचाने में मदद की, अंतरिक्ष यात्रियों का भी कई बार अभिनंदन किया, और डॉलफिनों को भी मुसीबत के समय सहायता दी...

बच्चों के घर वापस लौटने से कुछ दिन पहले 'समुद्री' शिविर में एक रोज़ ऐसी ही घटना घटी। एक दल संगठित होकर किसी ओर निकल पड़ा। वह एक खुले मंडप में जा पहुंचा जहां पर सारे दलों की मुलाकातें होती हैं। वहां पर सब ठहर गए। विस्मय के साथ जांचने लगे। सारी दीवारों पर बड़े-बड़े कागज़ लटके हुए थे। कागज़ बिल्कुल कोरे थे। अगर उन पर चित्र बने होते तो समझ में आ जाता कि प्रदर्शनी में लाया गया है! वर्ना इन्हें यहां क्यों लटकाया गया हैं? और इन मेज़ों पर क्या रखा है? कूचियां और रंगो की डिब्बियां आखिर किसलिये? हो सकता है कि शिविर में कोई चित्रकार आया है जो बच्चों द्वारा बताए गए विषयों पर चित्र बनाएगा?

पर तभी दल के अध्यक्ष ने सारी शंकाएं दूर कर दीं।

"अब हम पायोनियरों द्वारा बनाए जाने वाले पोस्टरों की 'कल्पना यान' नामक प्रतियोगिता शुरू कर रहे हैं," उसने कहा।

"प्रतियोगिता का विषय है: 'सन् 2000 में आर्तेक'।"

बच्चों ने कूचियां और रंग पकड़े और सोच में डूब गए। उनके मस्तिष्कों में भविष्य की सबसे विचित्र-विचित्र कल्पनाएं जन्म ले रही थीं। पर अपने चित्र के बारे में सोचते हुए वे बीच-बीच में एक टेढ़ी नज़र साथ वाले के चित्र पर भी डालते रहते। तोन्या याकोव्लेवा के चित्र की ओर देखकर वे व्यंग्य से मुस्कुरा देते। तोन्या की बनाई हुई रेखाओं से लग रहा था कि वह शायद अदालारी नामक जुड़वां चट्टानें बना रही है। बेशक, चट्टानें बहुत ही सुंदर हैं। प्रकृति के दो महान कलाकारों – सागर और वायु – ने इनको बनाया है। आर्तेक में घूमते हुए दल ने बहुत-सी बार इनके सौंदर्य का आनंद लिया था। पर समझ में नहीं आता कि अदालारी और भविष्य का क्या संबंध? अदालारी तो जैसी की तैसी ही बनी रहेंगी। और भविष्य तो है – अंतरिक्ष, ग्रह, सितारे... जबकि तोन्या ने 'सांसारिक' विषय चुना और अदालारी का चित्र बनाने लगी। शायद वह उन पर एक छज्जा बनाकर रेलिंग लगाना चाहती है ताकि सागर में न गिर पड़े। यही है उसके अनुसार सारा भविष्य। नहीं, वे तो बिल्कुल दूसरे रूप में आर्तेक के भविष्य का चित्रण करते हैं...

बुजुर्गों के अनुसार दो जुड़वां भाई हुआ करते थे। वे दो बहनों से प्यार कर बैठे जो स्वयं भी जुड़वां थीं। और इन भाइयों के पास एक तिलस्मी दिबिया थी जिससे उन्हें ऊंचे आसमान और सागर की गहराई

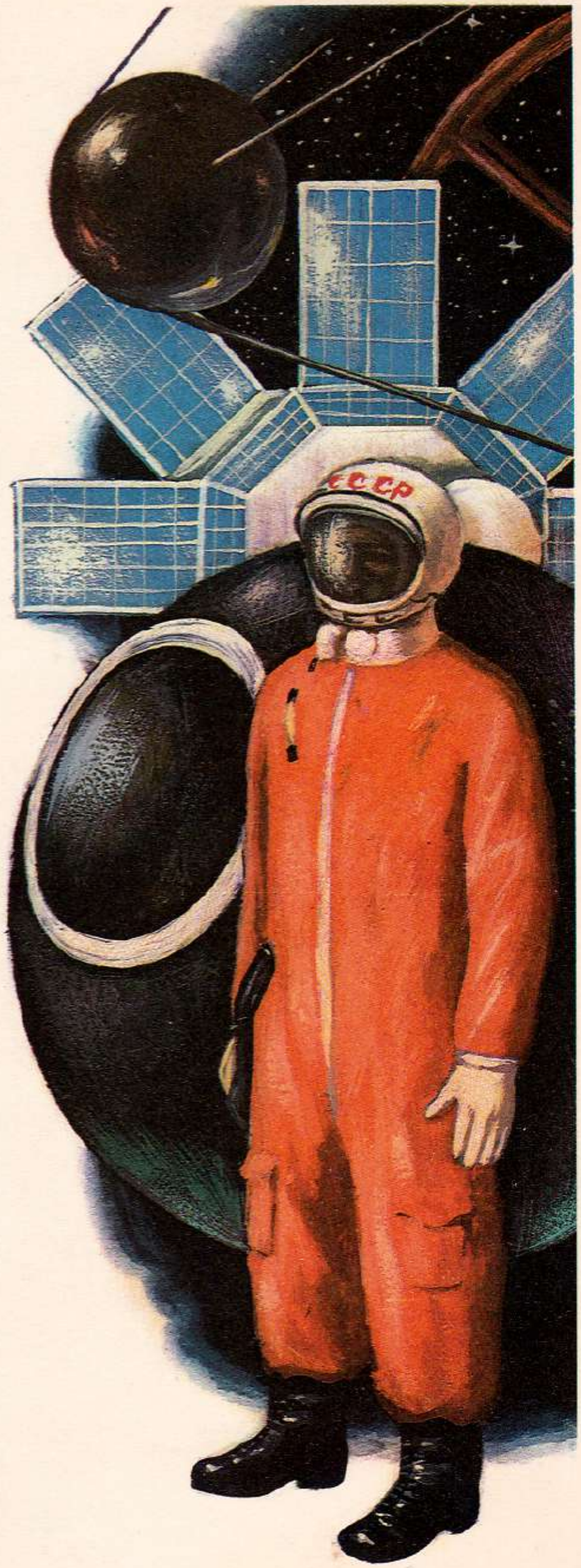

में घटनाओं के बारे में मालूम चलता रहता था। यह डिबिया उन्हें एक जादूगर से मिली थी और उसने कहा था कि यदि लोगों पर कोई गंभीर संकट आए तो इस डिबिया को खोलना अन्यथा इसे न छेड़ना। भाइयों ने उसकी न सुनी। केवल अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिये उन्होंने डिबिया से कहा कि वह उन्हें आसमान और सागर की गहराइयों में घटने वाली घटनाओं को दिखाए। क्रुद्ध जादूगर ने इस कारण से उन्हें दंड दिया। भाइयों को पत्थर का बना दिया और बहनों को भी। इस प्रकार वे अदालारी नामक चट्टानों में बदल दिया।

पर प्रतियोगिता का वातावरण बहुत गर्म था। वहां बच्चों ने क्या-क्या न सोचा : अंतरिक्ष यान, जो आर्तेक से मंगल और शुक्र ग्रह पर जा रहे हैं, आर्तेकवासी खुले अंतरिक्ष में अंतरिक्ष यात्रियों के रूप में, मंगलवासियों का आर्तेक में उतरना और यहां तक कि 'आर्तेक' चंद्रमा पर।

और तोन्या ने तो ले-देकर केवल दो जुड़वां चट्टानों अदालारी को बनाया। पर बच्चों को संपूर्ण चित्र पर देखने की देर थी कि वे उस पर से अपनी नज़र हटा न पाए।

चट्टानें उसी जगह पर स्थित थीं जहां उनको प्रकृति ने खड़ा कर दिया था। पर एक चट्टान से दूसरी तक पानी के नीचे से होकर कांच का बना एक कॉरिडोर था जिसमें लाल टाइयां लगाए बच्चे चल रहे थे। कॉरिडोर के चारों ओर नेपचून के राज्य के वासी खेल रहे थे, और अदालारी

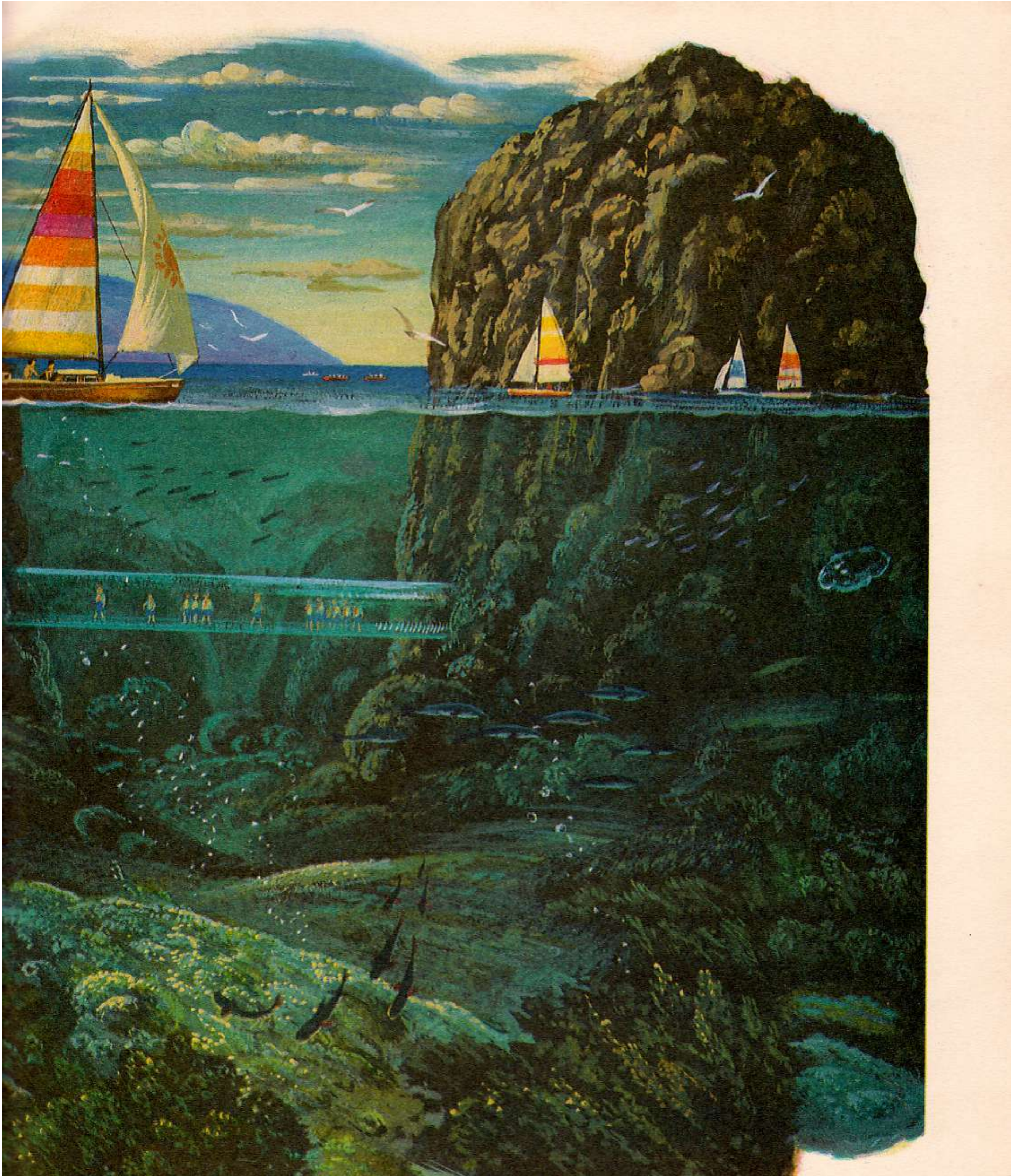

की चोटियों तक पहुंचाने के लिए कांच की बनी सुरंगों में लिफ़्ट चल रहे थे।

किसी को भी इसमें रत्ती भर की शंका नहीं थी कि पुरस्कार तोन्या याकोव्लेवा को ही मिलेगा।

और हुआ भी यही, पुरस्कार के साथ ही उसे चित्र के पिछले आवरण पर दल के सारे पायोनियरों के हस्ताक्षर भी स्मृति चिन्ह के रूप में मिले।

गीत कैसे बना

उस दिन आर्तेक में सब कुछ बहुत उदास प्रतीत हो रहा था। सूर्य भी और सागर भी और यहां तक कि रीछ पहाड़ी भी। सूरज पर मानो कोहरा छाया हुआ था जो कि बहुत ही कम होता है। सागर भी गुस्से से मानो नाक-भौं सिकोड़ रहा था। यह भी बहुत ही कम देखने में आता है। और रीछ पहाड़ी तो अपने सिर को कोहरे में छुपाए हुए था ताकि वह आर्तेकवासियों के उदासी भरे शब्द न सुने। आर्तेक एक बार फिर से बच्चों से विदा ले रहा था। पहाड़ियों से बसें बच्चों को वापस ले जाने के लिये आने ही वाली थीं।

गेहुएं रंग के बालों वाले बच्चे वीत्या मुसातोव की शाखा बेंच पर चुपचाप बैठी थी। जब कोई विदा ले रहा होता है तो उसे न जाने क्यों बातचीत के विषय ढूंढ़ने में बड़ी कठिनाई होती है।

"चलो कोई गाना गाते हैं," ज़ोया तिमोफ़ेयेवा ने कहा।

"कौन-सा गाना?" क्रुद्ध रुस्लान बोब्कोव ने चिढ़कर कहा। "यों ही सब कुछ गाया-कहा जा चुका है..."

"चलो फिर तो खुद ही बना लेते हैं," ज़ोया ने प्रस्ताव रखा।

"हा-हा-हा," रुस्लान हंस पड़ा, "एक संगीतकार और पैदा हुआ!"

पर किसी ने भी उसका समर्थन नहीं किया और रुस्लान चुप बैठ गया।

फिर से काफ़ी देर तक खामोशी रही। और अचानक इस खामोशी में किसी ने धीरे से कहा: "हमने यह जो गीत रचा है इस बारे में, इस बारे में..."

नन्ही लेना ज़ागोरुईको गा रही थी। सब कुछ सावधान हो गए। और वीत्या मुसातोव ने पूछा:

"गीत किस के बारे में है?"

"अभी मुझे मालूम नहीं," लेना ने कहा।

"मुझे मालूम है," तभी पेत्या इवानोव ने गाकर सुनाया: "सचमुच कितना मज़ा रहा है, आर्तेक में, आर्तेक में..."

"क्यों नहीं? ठीक ही तो है," वीत्या मुसातोव ने कहा और गाने लगा: "हमने यह जो गीत रचा है इस बारे में, इस बारे में, सचमुच कितना मज़ा रहा है आर्तेक में, आर्तेक में..."

"सही-सही!" हर्ष के साथ माशा ने कहा। और आगे यह: खूब धूप सेंकी जब मिलकर संवलाने तक, संवालाने तक..."

"चलो धूप सेंकी, और उसके बाद ?" रुस्लान बोब्कोव ने पूछा।

"उसके बाद यह !" फ़ुटबाल के वफ़ादार प्रेमी मीत्या ओगुर्त्सोव ने कहा : "खेला जब फ़ुटबाल कि डटकर अंधकार के गहराने तक, गहराने तक ..."

फ़ौरन सब सजीव हो उठे। हरेक के अंदर बैठा कवि जाग उठा और सब गीत में अपनी-अपनी पंक्तियां जोड़ने लगे। पर शाखा के अध्यक्ष वीत्या को भी अपनी बनाई हुई पंक्ति जोड़ने की इच्छा हुई और वह इस प्रकार गा उठा : "हेल-मेल का बड़े प्यार का रंग सदा ही, रंग सदा ही ..."

"मुझे भी कुछ कहने दो !" शर्मीली गाल्या मालीनोव्स्काया ने उठकर कहा। यह इतनी अद्‌भुत घटना थी कि सब चुप हो गए। गाल्या शाखा में सबसे ज़्यादा चुप रहने वाली जो थी। अर्थात उसे भी सृजन ने धर-दबोच लिया था।

"कहो !" वीत्या ने कहा।

"लो इस प्रकार ..." शर्माते हुए गाल्या ने सुनाया : "बिना लड़कियों के लड़कों का हाल बुरा ही, हाल बुरा ही ..."

"किंतु जुदाई का क्षण आया," वीत्या मुसातोव ने जोड़ा।

"गीत आज हम यह गाएं," तभी माशा बोल पड़ी।

"विदा, दोस्तो, विदा साथियो," मीत्या ओगुर्त्सोव चिल्लाया।

"शायद फिर कभी मिल पाएं," लेना ज़ागोरुईको ने अंतिम कड़ी सुनाई।

"ओफ़ !" तभी शाखा के अध्यक्ष ने करुणात्मक स्वर में कहा। "गीत तो बना लिया पर उसको लिखना तो भूल ही गए !"

"क्या मतलब कि भूल गए ?" ग्रीशा क्रास्नोश्चोकोव ने विरोध किया, वह शाखा का इतिहास लिखने वाला जो था। "यह रहा गीत, लो !" और उसने बच्चों को एक कापी दिखाई जिस पर लिखा था : "शाखा की डायरी। इतिहासकार ग्रीशा क्रास्नोश्चोकोव"।

"सब पढ़कर सुनाओ," वीत्या ने कहा। ग्रीशा ने इस प्रकार पढ़कर सुनाया :

हमने यह जो गीत रचा है
इस बारे में,
इस बारे में,
सचमुच कितना मज़ा रहा है
आर्तेक में,
आर्तेक में,
खूब धूप सेंकी जब मिलकर
संवलाने तक,
संवलाने तक,
खेला जब फ़ुटबाल कि डटकर
अंधकार के गहराने तक,

गहराने तक,
हेल-मेल का बड़े प्यार का
रंग सदा ही,
रंग सदा ही
बिना लड़कियों के लड़कों का
हाल बुरा ही,
हाल बुरा ही,
किंतु जुदाई का क्षण आया,
गीत आज हम यह गाएं,
विदा, दोस्तो, विदा साथियो,
शायद फिर कभी मिल पाएं।
तो विदा, विदा, आर्तेक,
यह गाएं मित्र अनेक।

"अब सब मिलकर गाएंगे!" वीत्या ने उत्साह से कहा।

और इतने में जब बच्चे गाना गा रहे थे प्रकृति ने भी अपना जादू दिखा दिया: धूप निकल गई, सागर भी मुस्कुराने लगा, कोहरा साफ़ हो गया, और रीछ पहाड़ी भी मानो अपना सिर पानी से निकालकर गाने आनंद लेने लगा।

रादुगा प्रकाशन
मास्को